thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४ अंक १ जनवरी २०१४

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

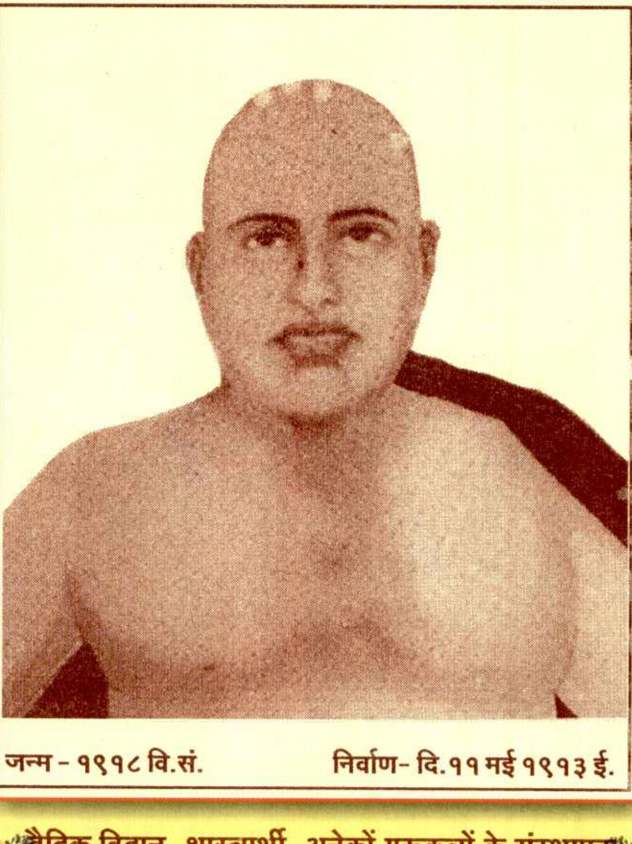

जन्म - १९१८ वि.सं. निर्वाण- दि.११ मई १९१३ ई.

वैदिक विद्वान्, शास्त्रार्थी, अनेकों गुरूकुलों के संस्थापक
स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वती
निर्वाण शताब्दीपर शत् शत् अभिवादन !

thearyasamaj.org

स्व. बिराजदार स्मृति विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा २०१३

आर्य समाज परली में सभाद्वारा आयोजित विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए मान्यवर।

छात्रों का सम्बोधित करते हुए सभा के कोषाध्यक्ष तथा आर्य समाज परली के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर।

भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रथम पुरस्कार प्राप्त वक्त्री कु. निशिगंधा परलकर (अंबाजोगाई)।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११४ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत २०७०
दयानन्दाब्द १८९ पौष १० जनवरी २०१४

प्रधान सम्पादक
राजेंन्द्र दिवे
(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२११५११९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) अनाचार के तथाकथित पक्षधर! (सम्पादकीय)..................२
२) श्रुतिसन्देश/ सूचना..................३
३) स्वामी दर्शनानन्द- दार्शनिक शास्त्रार्थ महारथी ४
४)काव्यतीर्थ डॉ.हरिश्चन्द्र रेणापुरकर..................६
५) स्वा.सै.लदनियां गौरव स्थिरनिधि..................९
५) आरोग्य चर्चा..................१२
६) जीवन संग्राम में विजय हो तो..................१३
७) समाचार दर्पण..................१६
८) शोक समाचार..................१७

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी..................१९
२) सुभाषित रसास्वादः/आर्य समाज पिंपरी ची प्रेरक गाथा..........२०
३) स्त्री सन्मान सुखी- गृहस्थाश्रमाचा आधार..................२५
४)गाथा वाचु दयानंदाची..................२८
५) शोक वार्ता / वार्ता विशेष..................२९
६) खास वाचकांसाठी-म.दयानंदांचे कॉमिक्स (मराठी)..........३१

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका मे प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.वीड ही होना

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम् अनाचार के तथाकथित पक्षधर !

आजकल हम ऐसी व्यवस्था में जी रहे हैं, जहां अच्छे या बुरे कामों की पहचान करना प्रायः कठिन सा हो गया है। हमारी शासन व कानूनव्यवस्थां ही अब हमें मनुष्यपन से हटाकर पशुत्व से भी अधिक अधम जीवन जीने हेतु प्रवृत्त कर रही है। तब प्रत्येक अच्छे मनुष्य की स्थिति **'किं करोमि क्व गच्छामि'** जैसी बनती दिखाई दे रही हैं। स्वयं को सुशिक्षित माननेवाले लोगों में अब यह विवेक नहीं रहा कि वे यथार्थ सत्य को स्वीकारें ? इसीमें प्रगतिशील विचारधारा की दुहाई देनेवाले नास्तिक, कोरे तर्कवादी और पाश्चात्य विचारों के अनुगामी तथा स्वयं को आधुनिक विज्ञानवादी के रूप में घोषित करनेवाले लोगों के स्वैराचार को बढावा मिल रहा है, जो कि मानवीय संस्कृति व सभ्यता के संवर्धन में संकटसा बनते जा रहा है।

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिकता को अपराध के रूप में घोषित किया है। दिल्ली हायकोर्ट के पहले निर्णय को निरस्त करते हुए कानून की ३७७ धारा को बरकरार रखते हुए समलिंगी सम्बन्ध स्थापित करनेवालों को गुनहगार मान लिया है और उन्हें कारावास की शिक्षा तक का प्रावधान दिया है। सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला वास्तव में मनुष्यमात्र के लिये अत्यन्त उपयुक्त व सबके लिये कल्याणकारी साबित होता है।

इसकी उपयुक्तता इसलिये है कि इस निर्णय से मानव राक्षसी वृत्तियों से बच सकता हैं। परमात्मा ने प्राणिमात्र के कल्याण हेतु यह सृष्टि बनाई है। सृष्टिव्यवस्था के विरूद्ध आचरण हम सब के लिए घातक है। समलैंगिकता यह प्रकृति के विरूद्ध हैं। इससे मानव समाज की अपरिमित हानि होनेवाली हैं। किन्तु दुर्भाग्य से इसके पक्षधर सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को बहुतही अनुचित बताकर इसे मानवाधिकार का उल्लंघन बता रहे हैं। जब यह निर्णय आया, तब तथाकथित प्रगतिशील विचारधारावाले लोगों की बौखलाहट बढती दिखाई दी। देश का मीडिया वर्ग भी भडक उठा। अनेकों अखबार बढे पैमाने पर समलैंगिक सम्बन्धों का पुरजोर समर्थन करते रहें। अनेंको राजनेता व कई सुधारवादी लोग भी इसके समर्थन में खडे हो गये। यह कौनसी बुद्धिमतावाली बात है कि हम ऐसे घिनौने अनाचार वर्धक विचारों का समर्थन करें। इससे आज के तथाकथित प्रगतिशील विचारधारा के लोगों की पहुंच कितनी विनाश की ओर बढ रही हैं ,इसका हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं।

thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

ईश्वर के गुणधर्म

पुरूषऽएवेदꣳ सर्वं यद् भूतं यच्चं भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।२।। (यजु.३१/१)

पदार्थः- हे मनुष्यों ! (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ (च) और (यत्) जो (भाव्यम्) उत्पन्न होनेवाला (उत) और (यत्) जो (अन्नेन) पृथिवी आदि के सम्बन्ध से (अतिरोहति) अत्यन्त बढता है, उस (इदम्) इस प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप (सर्वम्) समस्त जगत् को (अमृतत्त्वस्य) अविनाशी मोक्षसुख वा कारण का (ईशानः) अधिष्ठाता (पुरूषः) सत्य गुण, कर्म, स्वभावों से परिपूर्ण परमात्मा (एव)ही चरता है ।।२।।

भावार्थः- हे मनुष्यों ! जिस ईश्वर ने जब-जब सृष्टि हुई तब तब रची, इस समय धारण करता फिर विनाश करके रचेगा । जिसके आधार से सब वर्त्तमान है, और बढता है उसी सबके स्वामी परमात्मा की उपासना करो, इससे भिन्न की नहीं ।।२।

चलो परली-वै. (महाराष्ट्र) **सस्नेह निमंत्रण** (दि. ९ मार्च २०१४) प्रातः १०

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज परली के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रसिद्ध समाजसेवी उद्योजक मा.श्री लखमसीभाई वेलानी (पुणे),मा.डॉ.देविदासरावजी नवलकेले (मुम्बई), आर्य समाज सम्भाजीनगर द्वारा (मा.श्री दयारामजी बसैये बंधु के प्रयत्नों से) तथा अन्य दानदाताओं के सहयोग से प्राप्त रू. दस लाख राशि से श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम, परली में नवनिर्मित भव्य वास्तु

'महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञशाला का' उद्घाटन समारोह

उद्घाटक - एड्. प्रकाशजी आर्य (मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

अध्यक्ष - मा.श्री जयसिंहरावजी गायकवाड पाटील (पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री)

प्रमुख अतिथि

मा.डॉ.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री (सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी-दिल्ली सरकार)

मा.डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे (पूर्व राज्यसभा सदस्य तथा पूर्व उपकुलपति)

मा.श्री लखमसीभाई वेलानी (कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता व प्रसिद्ध उद्योजक पुणे)

मा.डॉ. श्री देविदासराजवजी नवलकेले (अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक व उद्योजक, मुम्बई)

मा.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य (कवि एवं आर्य भजनोपदेशक, नागपुर)

अन्य कार्यक्रम- ● १ से ७ मार्च २०१४ - प्रान्तीय स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर, ● ५ से ७ मार्च - वानप्रस्थी चिन्तन शिविर, ● ८ मार्च १४ अन्तर्जातीय विवाह सम्मेंलन, सामूहिक वानप्रस्थाश्रम दीक्षा समारोह तथा आर्य संगठन चिन्तन सम्मेलन व ● ९ मार्च २०१४- ६ समर्पित पुरोहितों का सम्मान

thearyasamaj.org

स्वामी दर्शनानन्द : दार्शनिक व शास्त्रार्थ महारथी

-डॉ.अशोक आर्य

आर्यसमाज के महान दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म कुलीन ब्राह्मण रामप्रताप निवासी जगराओं जिला लुधियाणा (पंजाब) के घर माघ कृष्ण १० सं. १९९८ वि. (१५ नवम्बर) को हुआ। आरम्भिक नाम नेतराम को बदलकर कृपाराम रखा गया। उन्होंने फारसी व संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। उनका ११ वर्ष की आयु में विवाह हो गया

वैराग्यवृत्ति वाले कृपाराम ने पिता के व्यापार को संभालने में कुछ भी रूचि न ली। घूमते हुए अमृतसर में महर्षि के विचार सुन नवीन वेदान्ती कृपाराम पर दयानन्द का रंग चढ गया। आपने महर्षि के ३७ व्याख्यान सुने तथा इतने वर्ष ही आर्य समाज की सेवा का गौरव भी पाया। काशी जाकर दर्शनों का विस्तृत अध्ययन किया तथा जो पैसा वह लेकर गए थे, उससे काशी में **''तिमिरनाशक यन्त्रालय''** स्थापित किया। यहां से व्याकरण व अनेक आर्ष ग्रन्थ छापकर विद्यार्थियों को सस्ते दामों में दिये। इससे छात्र मण्डली में अच्छी प्रसिद्धि मिली। १८९३ से ९४ में पंजाब तथा १८९९ से १९०० में आगरा में प्रचार किया तथा लघु प्रचार पुस्तकें लिखना व्याख्यान देना शास्त्रार्थ आपके दैनिक कर्म बन गए। आगरा में ही पं. भीमसेन शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ तथा अगले वर्ष ही गंगातट के राजघाट स्थान पर स्वामी अनुभवानन्दजी से संन्यास लेकर **'दर्शनानन्द स्वामी'** के नाम से प्रचार में जुट गए।

आर्यसमाज के शास्त्रार्थियों में आपका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी मतानुयायियों से अनेक शास्त्रार्थ किये। इस क्षेत्र में आपने अपनों को भी नहीं छोडा तथा **वृक्षों में जीव** विषय पर पं. गणपति शर्मा जी से भी उलझ पडे जोकि आर्य समाज के सम्मानित प्रवक्ता थे। आपने प्रचार में पत्र व पत्रिकाओं के महत्व को खूब पहचाना। अतः आपने एक के बाद एक कुल एक दर्जन के लगभग उर्दू व हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके प्रचार काल में आपके प्रचार क्षेत्र की भाषा उर्दू होने के कारण आपका अधिकांश लेखन व अधिकांश पत्रिकाएं उर्दू में ही रहीं।

यह सब करते हुए भी आपने गुरूकुलों की वृद्धि में अपना पूरा ध्यान दिया। आप गुरूकुल शिक्षा के महत्त्व को अच्छी प्रकार समझते थे। आप नेतागिरी पसन्द न करते थे **''काम करो व भूल जाओ''** की भावना आपमें अति बलवती थी। इसी के मध्य दृष्टि आपकी सदा यही नीति रही कि आपने मेहनत करके गुरूकुलों

thearyasamaj.org

की स्थापना की, अच्छी प्रकार व्यवस्थित होने के पश्चात इन्हें सुयोग्य हाथों में सौंप दिया। आपने सिकन्दराबाद से रावलपिण्डी तक अनेक गुरूकुलों की स्थापना की। वर्तमान गुरूकुल ज्वालापुर भी आपके प्रताप क ही गुणगान कर रहा है।

जहां तक लेखनी की प्रश्न है, इस क्षेत्र में भी आपकी देन अभूतपूर्व ही रही है। आपने जितनी मात्रा में तथा जितना गुणों से युक्त साहित्य विरासत में दिया, इतना बहुत कम आर्य महापुरूष ही लिख पाए हैं। आपके लेखन के विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन किसी गहन प्रचारात्मक विषय पर एक लघु पुस्तक लिखा करते थे। इनकी निश्चित संख्या बताना अनुमान से परे है। दर्शनों पर आपके तार्किक भाष्य तथा छः उपनिषदों पर अत्यन्त सरल व्याख्या देकर इसे आपने सर्वसुलभ बना दिया। मनुस्मृति व गीता की टीका भी आपकी लेखनी के दर्शन कराती है। भारी संख्या में आपने अन्य मतों की समीक्षा में भी अनेक पुस्तकें लिखी।

आप न केवल नियमित देशाटन करते रहे, अपितु लेखन, प्रचार व शास्त्रार्थों में भी आपने कभी विराम न आने दिया। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आना स्वाभाविक ही था। अतः हाथरस अस्पताल में चिकित्सा के मध्य आपका देहान्त हो गया। आपके निधन से एक महान् शास्त्रार्थी, अद्वितीय प्रचारक, अभूतपूर्व वैदिक लेखक, गुरूकुलों की संख्या बढाने वाला यह सितारा ऐसा विदा हुआ कि इस क्षति को पूरा कर पाना हमारे लिए असम्भव हो गया। यदि उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लेकर हम भी स्वाध्याय व प्रचार को बढा सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-१०४, शुक्ला अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी-
२०१०१० जि. गाजियाबाद

योग साधना का उत्तम स्थान....सुख-शान्ति का धाम

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु **आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड- (महा.)** में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं।

साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस - पन्द्रह तक रह सकते हैं। यहांपर प्राकृतिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा योग-साधना, स्वाध्याय-चिंतन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं। - व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

विभिन्न पुरस्कारों से अलंकृत महाराष्ट्र के संस्कृत कवि

'काव्यतीर्थ' डॉ. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर

-डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

डॉ. हरिश्चंद्र रेणापुरकर महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध संस्कृत भाषा के कवि एवं लेखक हैं। आज ८६ वर्ष की परिपक्व आयु में भी आप निरन्तर लेखन कार्य में निरत हैं तथा सामयिक संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में आज भी आप की काव्य रचना निरन्तर प्रकाशित होती हैं।

विगत २००८ ईशवीय वर्ष में उनका लगभग ३५० पृष्ठों का एक काव्य प्रकाशित हुआ है जिसका नाम है **"प्राचीन-भारतीय-संस्कृतीयम्"**। इस काव्य को सत्रह सर्गों में विभक्त किया गया है तथा इसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सम्बन्ध में उनके महत्त्व को प्रतिपादित करने हेतु विषयों पर व्यापक विचार प्रस्तुत किया गया है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल बिन्दुओं जैसे- पुरूषार्थ-चतुष्टय, निष्कम-कर्मयोग, आत्मतत्त्व-निरूपण, शिक्षा, यज्ञ, वर्णाश्रम व्यवस्था, संस्कार आदि के सम्बन्ध में अत्यन्त वर्णनात्मक सरल शैली में उसके महत्व के प्रतिपादक तत्त्वों का निरूपण प्रस्तुत किया गया है।

वास्तव में यह ग्रन्थ २००४ में भारतीय विद्या भवन मुम्बई द्वारा पहले केवल मूल संस्कृत भाषा में ही प्रकाशित किया गया था। बाद में इसकी उपादेयता एवं सामान्यजनों के लिए इसमें अभिरूचि तथा इसके महात्म्य को परिचित कराने के लिए प्रथम प्रकाशन के चार वर्षों बाद हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हुआ हैं।

लेखक का जीवन परिचय-

ग्रन्थ के लेखक श्री हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर का जन्म महाराष्ट्र के लातूर जिले के रेणापुर ग्राम में १७ सितम्बर सन् १९२४ ईस्वी को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा रेणापुर ग्राम में हुई थी। पुनः माध्यमिक शिक्षा लातूर नगर में हुई। विश्वविद्यालयस्तरीय शिक्षा के लिए आप औरंगाबाद गए तथा आपने संस्कृत भाषा में एम.ए.परीक्षा आन्ध्रप्रदेश के हैदराबाद से उत्तीर्ण की।

श्री हरिश्चन्द्र जी ने जीवनयापन के लिए शिक्षा विभाग में ही अध्यापन की वृत्ति को स्वीकार किया तथा कर्णाटक प्रदेश के गुलबर्गा, शिमोगा, चिकमंगलूर आदि नगरों में संस्कृत विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढाते हुए अन्त में प्राचार्य के रूप में १९८० में अवकाश

thearyasamaj.org

प्राप्त करके गुलबर्गा में निवास करते रहे बढती आयु में शारीरिक जरावस्था के कारण सम्प्रति वे अस्वस्थ हो चुके हैं। अतः अपने सुपुत्र श्री सुधीरकुमार के पास लातूर में ही रह रहे हैं।

विविध रचनाएँ -

इनकी रचनाओं में सर्वप्रथम एक हजार श्लोकों से भी अधिक का पहला काव्य संग्रह **काव्योन्मेषः** नाम से १९८९ में भारतीय विद्या भवन मुम्बई द्वारा प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार आपकी कविताओं का एक संग्रह **काव्य निष्यन्दः** नाम से प्रकाशित हुआ, जिसमें लगभग ७०० श्लोक संगृहीत है। **'काव्योद्यानम'** नाम से आपका एक अन्य संग्रहीत भी प्रकाशित है जिसमें एक हजार से भी अधिक पद्य संग्रहीत किये गए हैं।

श्री हरिश्चचन्द्रजी रेणापुरकर भारतीय राजनीति की तत्कालिक समस्याओं पर सदैव अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा को सामयिक एवं लोकप्रिय बनाने के लिए काव्य रचना करते हैं, जिसका प्रमाण यह है कि जब देश में अयोध्या में विवादित राम मन्दिर को धराशायी किया गया उसके दो मास के भीतर ही **राममन्दिरविवादः** नाम से ४०० से भी अधिक श्लोकों का एक काव्य प्रकाशित हो गया। इसी प्रकार भारतीय राजनीति में लम्बे समय तक केन्द्रबन्दु बनें रहनेवाली श्रीमती इन्दिरा गाँधी के उत्थान एवं पतन को ध्वनित करनेवाली लगभग २३० श्लोकों की एक लघु काव्य रचना **इन्दिरा पतनोत्थानम्** नाम से प्रकाशित हो गई।

लेखक की अन्य विशेषता-

श्री हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर की सबसे बडी विशेषता यही है कि आज भी संस्कृत भाषा में अनेक कवि जहाँ अपनी रचनाओं के लिए प्राचीन घटनाओं का पौराणिक आख्यानों का आश्रय लेते हैं, वहीं श्री रेणापुरजी तत्कालिक समसायकि घटनाओं एवं वृत्तान्तों का आश्रय लेकर संस्कृत काव्य की श्री वृद्धि करते हुए संस्कृत भाषा को वर्त्तमान से जोडने का प्रयास कर रहे हैं।

डॉ. रेणापुरकर जी बहुभाषाविद् हैं। उनका लेखन केवल संस्कृत में ही सीमित नहीं है, प्रत्युत उनकी कुछ रचनाएँ हिन्दी एवं मराठी में भी प्रकाशित हैं। वे हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के साथ ही मराठी, कन्नड, उर्दू एवं तेलुगु भाषा के भी अच्छे जानकार हैं। संस्कृत लेखकों में ऐसे लोग दुर्लभ ही हैं जो इतनी भाषाओं को जानते हैं तथा इनके अनेक भाषाओं में लेखन कार्य भी करते हैं।

भारतवर्ष में इस समय संस्कृत की जितनी भी मासिक पाक्षिक या त्रैमासिक पत्रिकाएँ निकल रही हैं, उनमें कहीं न कहीं, कभी न कभी श्री रेणापुरकरजी की रचनाओं का दर्शन प्रायः होता रहता है। भारत वर्ष या

thearyasamaj.org

विश्व राजनीति में यदि कोई कभी भी घटना चक्र ऐसा घटित हो जाता है, जो राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण या चर्चित होता है तो यह असम्भव है कि उस घटना चक्र पर श्री रेणापुरकरजी की लेखनी न उठे। इतनी आयु में भी उनके अन्दर अब भी लिखते रहने की प्रवृत्ति हमारे जैसे लेखकों के लिए जीवनी शक्ति के रूप प्रेरणा देती रहती है।

'भारत-संस्कृतीयम्' की विशेषता-

आलोच्य **प्राचीन-भारत-संस्कृतीयम्** नामक उनकी रचना प्राचीन भारतीय संस्कृति के भौतिक तत्त्वों का केवल प्रतिपादन मात्र ही नहीं है, प्रत्युत उनमें आधुनिक वैज्ञानिक विचारों का समावेश भी है। जैसे वे यज्ञ की चर्चा करते हुए जहाँ उसकी विशेषता बताते हैं वहीं **वैदिकी हिंसा न भवति।** का घोर विरोध करते हुए प्राचीन वैदिकों द्वारा क्रियमाण याज्ञिक पशु हिंसा के सन्दर्भ में लिखते हैं - वेदे स्पष्टं कथितमसकृत् ''पाहि नूनं पशुत्वमय, त्वं मा हिंसीः पशुमिति''वयं नैकवारं पठामः ।एवं हिंसारहितमहिते पूतयज्ञे पशूनाम धूर्तैर्हिंसा रूचिर-रसना-स्वादपूर्त्यै कृताऽभूत्॥

इस पुस्तक में प्राचीन भारत वर्ष के अनेक वैज्ञानिक विषय जैसे- ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, गणित, विमान विज्ञान आदि की भी चर्चा हैं, जिससे हमारी प्राचीन संस्कृति गर्व करने योग्य प्रतीत होती है तथा उसकी समृद्धि हमें आकृष्ट करती है। अधिक न लिखते हुए हम इस लघु लेख में एक वयोवृद्ध, आज भी संस्कृत भाषा के लिए बद्धपरिकर तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण सम्पन्न उदारवादी संस्कृत लेखक के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सकते हैं, जो लगभग मौन रहकर अपनी साधना में लीन है। श्री रेणापुरकर जी को महाराष्ट्र सरकार में महाकवि कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार से अलंकृत भी किया है। इस प्रकार के लेखक की चर्चा करना वास्तव में कृतज्ञता व्यक्त करना है

ई.स.२०११ में श्री रेणापुरकर जी को राष्ट्रपति ने उन्हें संलक्षित करके उन्हें सम्मान-पत्र के साथ पाँच लाख रूपये की धन राशि भी प्रदान की है। साथ ही इस वर्ष भारत सरकार के मानव विकास मंत्रालय द्वारा रू. ५ लाख का **महर्षि बादरायण व्यास सम्मान** एवं. उ.प्र.सरकार द्वारा रू. २५ हजार का **संस्कृत विद्वत् मनीषि सम्मान** भी प्राप्त हो चुका है। इन सभी पुरस्कारों के पूर्णतया सत्पात्र हैं। प्रसिद्ध 'गुंजारव'नामक त्रैमासिक संस्कृत पत्रिका के सम्पादक डॉ.देवी प्रसाद खरवंडीकरजी ने उनके प्रति यह पद्य ठीक ही लिखा है-

यदायुर्वाग्देवी चरण कमलाराधमपरम्,
यदीय साहित्यं रसिकजनतोषं च कुरूते।
यदीय पाण्डित्यं भवति सरसोन्मेषं सबलतम्,
हरिश्चन्द्रो रेणापुरकरकवीन्द्रः स जयति॥

-बी-२९, आनन्द नगर मेन रोड,
रायबरेली -२२९००१ (उ.प्र.)

thearyasamaj.org

प्रखर कर्मठ आर्य समाजी दम्पती स्वा.सै.लदनिया व सौ.धापादेवी (हिंगोली) के गौरव में सभा में आसन व प्राणायाम राज्यस्तरीय स्पर्धा हेतु रु.१,११,१११ की स्थिरनिधि

१) स्थिरनिधि स्थापना के लिये लदनियां परिवार द्वारा सभा को पत्र

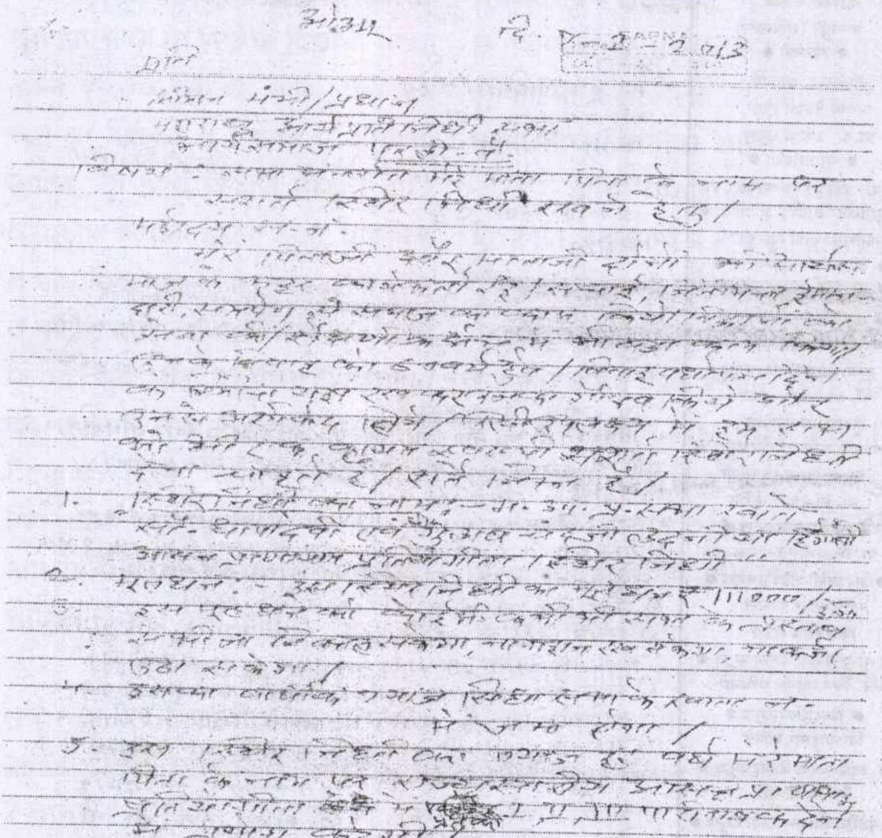
ओ३म्
प्रति
श्रीमान मंत्री/प्रधान
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
महोदय नमस्ते

thearyasamaj.org

२) स्थिरनिधि के लिए सभा का बैंक को दिया गया पत्र

॥ ओ३म् ॥
● 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' ●
अयं तु परमो धर्मो यद् योगेन आत्मदर्शनम्।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, वाजेगांव-नांदेड

कार्यालय - आर्य समाज, परली वैजनाथ - ४३१५१५ जि. बीड (महाराष्ट्र)

पंजियन - एफ-३३२ न्यास नों. क्र. - ६/टी.ई. (७६) १६७/१०४२

मानव सरकार - वाहक संस्कार

प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	श्री उग्रसेन राठौर	राजेन्द्र दिवे
परली वै. (मो.०९७३०६७६८५७)	परली वै. (मो. ०९४२२२४५८४७)	लातूर (मो. ०९८२२३६५२७२)

● कार्यकारी प्रधान ●
बलिराम पाटील
● उपप्रधान ●
देवराम खोरदे
वामप्रति (धुंडिराज)
● उपमन्त्री ●
माधवराव देशपांडे
प्राचार्य देवदत्त तुंगार
प्रा.डॉ. प्रकाश कदम
● परामर्शदाता ●
डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी
● पुस्तकाध्यक्ष/वेद प्र.अधिष्ठाता ●
लक्ष्मणराव आर्य (तुल्सगुंडे)
● वैदिक गर्जना-सम्पादक ●
प्रा. डॉ. नयनकुमार आचार्य
● आर्यवीर दल अधिष्ठाता ●
व्यंकटेश हालिंगे
● कन्या संस्कार शिविर प्रमुख ●
डॉ. सौ. शारदा तुंगार
दिवाकरराव देशपांडे
● मानवता संस्कार शिविर प्रमुख ●
प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी
प्रा. डॉ.प्रकाश कदम
● स्पर्धा उपक्रम प्रमुख ●
प्रा. शिवाजीराव मायकवाड
● अंतरजातीय विवाह प्रमुख ●
माणिकराव भोसले
किशनराव राऊत
● गौ-कृषि सेवा विभाग प्रमुख ●
अॅड. विनयकुमार वाघमारे
● दिनदर्शिका प्रमुख ●
विजयकुमार कापडे
● स्वास्थ्य रक्षा शिविर प्रमुख ●
वैद्य विज्ञानमुनि
● पुरोहित प्रशिक्षण शिविर प्रमुख ●
सुरेश चिन्चावार
● संरक्षक ●
कृष्णचन्द्र आर्य
रामपाल लोहिया
आचार्य शिवमुनि
गुलाबचन्द लाहोटिया

जा. क्र. -   दिनांक - ४. ३. २०१३

प्रति,
मा. शाखाधिकारी साहेब,
भारतीय स्टेट बैंक,
परली- वैजनाथ.

विषय :- सदार्थ स्थिर निधी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा अंतर्गत रखने हेतु.

महोदय,
सा. नमस्ते
श्रीमान संतोष जी गुलाबचंदजी लाहोटिया साहेबजी नगर, हिंगोली के इन्होंने सभा में सदार्थ स्थिर निधी रखने के लिए पैसे दिए है। अतः सदार्थ स्थिर निधी रख लेने की कृपा करें।

शर्ते निम्नप्रकार है

१) स्थिर निधी का नाम :- "म. आ. प्र. सभा अंतर्गत स्व. सौ. छायाराणि एवं गुलाबचंदजी लाहोटिया हिंगोली आसन प्राणायाम प्रतियोगिता स्थिरनिधी."
२) स्थिर निधी का मूल धन ११,०००=०० एक लाख ग्यारह हजार.
३) मूल धन कोई भी, कभी भी, सभा के प्रस्ताव से भी, ना निकाला सकेगा, ना कर्जा उठा सकेगा, ना गहाण रख सकेगा।
४) स्थिर निधि का केवल नुतनीकरण होते रहेगा।
५) स्थिर निधी का वार्षिक ब्याज सीधा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा के खाता क्र. १११५४१५२८४३ मे जमा होगा।
६) सभा इस ब्याज का उपयोग प्रतिवर्ष आसन प्राणायाम प्रतियोगिता के पारितोषिक वितरण के लिए करेगी।
७) महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी टूटने के बाद या असमर्थ होनेपर, स्थिर निधी की अंतिम स्वामिनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा, दिल्ली होगी। उन को भी केवल स्थिर निधी के ब्याज का उपयोग उद्देशानुसार करने का अधिकार होगा।

सायमेत :- १) स्थिर निधी दान दाता मूळ पत्र.

(हस्ताक्षर)

महाराष्ट्र आ. प्र. प्रतिनिधि सभा के लिए
(हस्ताक्षर)
प्रधान   मंत्री   कोषाध्यक्ष

thearyasamaj.org

३) भारतीय स्टेट बैंक की शाखा -परली में स्थापित **'स्वा.सै. गुलाबचंदजी लदनियां (हिगोंली) स्थिरनिधि'** की फोटो स्टेट कापी ।

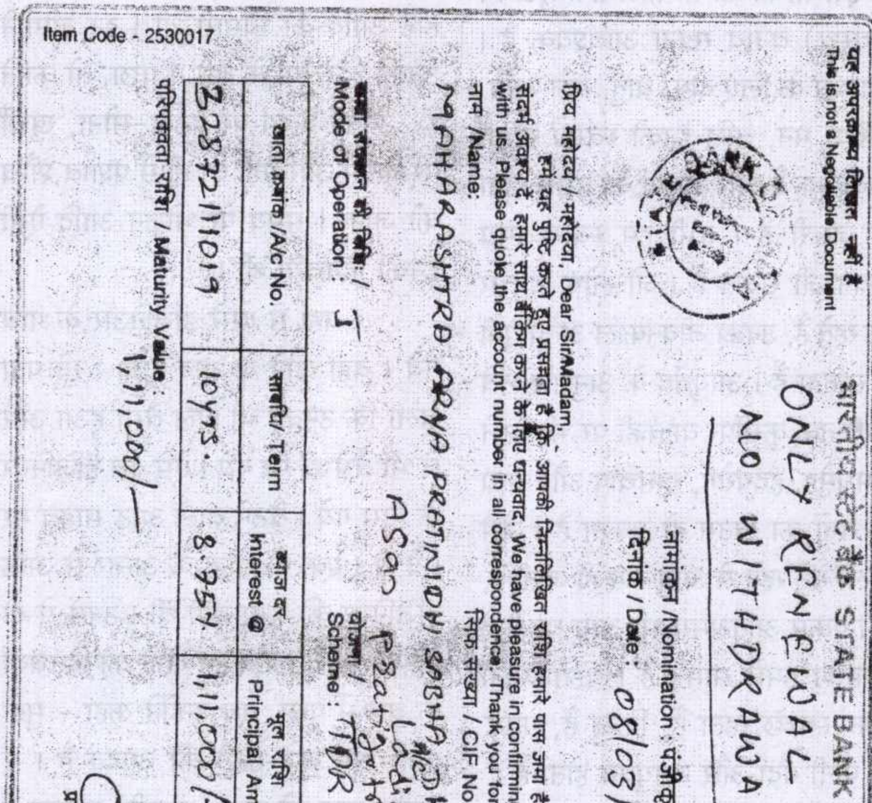
यह अपरक्राम्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

ONLY RENEWAL
NO WITHDRAWAL

सावधि जमा सूचना
TERM DEPOSIT ADVICE
(सावधि जमा रसीद के एवज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

नामांकन /Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date : 08/03/2013

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,
हमें यह पुष्टि करते हुए प्रसन्नता है कि आपकी निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है. भविष्य में, कृपया आपके पत्राचार में खाता क्रमांक का संदर्भ अवश्य दें. हमारे साथ बैंकिंग करने के लिए धन्यवाद. We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम /Name: सिफ संख्या / CIF No. पैन संख्या / PAN NO.
MAHARASHTRA ARYA PRATINIDHI SABHA A/C Dhapadoi and gulabchand Ladiniya Hingoli Asan pratigotra sthir Nindi

खाता संचालन की विधि / Mode of Operation : J
योजना / Scheme : TDR

खाता क्रमांक /A/c No.	सावधि/ Term	ब्याज दर Interest @	मूल राशि Principal Amt.	जारी करने की तारीख Value Date	परिपक्वता की तारीख Maturity Date
32872111019	10yrs.	8.75%	1,11,000/-	08/03/2013	08/03/2023

परिपक्वता राशि / Maturity Value : 1,11,000/-

भवदीय /Yours faithfully,
प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता /Authorised Signatory
कृपया पृष्ठ पलटें /P.T.O.

Item Code - 2530017

thearyasamaj.org

बैठे रहना घातक है।

-वैद्य विज्ञानमुनि(परली-वै.)

शरीर यह जीवन जीने का साधन है। इस साधन को सौ साल तक सुखमय (स्वस्थ) बनाये रखना आवश्यक है। स्वास्थ्य के लिए दोष, धातु, मल अग्नि, इन्द्रिय, मन, बुद्धि इनको स्वस्थ रखना आवश्यक है और आत्मा का प्रसन्न रहना भी जरूरी है। तभी हम स्वास्थ्यमय जीवन जी सकते हैं। जो लोग दिनभर बैठे रहते हैं, उनका जीवनकाल अल्पायुषी हो सकता है। आयुर्वेद के अनुसार लंबे समय तक कुर्सीपर या कहीं पर भी बैठने से मधुमेह, हृदयरोग, रक्तचाप और अन्य भी रोगों का खतरा हो सकता है। जैसे खाली बैठे रहने से आयु कम हो जाती है, उसी प्रकार अतिश्रमसे भी आयु घटती है उदाहरण हमारे सामने है। बहता पानी साफ-स्वच्छ रहता हैं, किन्तु है, गड्ढे का पानी गंदा और जंतुयुक्त होता है।

महाराष्ट्र के सिंचन आयोग विभाग के पूर्वायुक्त श्री डॉ दिनकरराव माधवराव मोरे साहब के जीवन का प्रसंग है। एक बार उनके १-२ मित्रों को कुछ निवृत्त हुये अभियंता दस साल बाद मिलने गये। तभ उनके घर जाने के बाद उन्होने पूछा - साहब कहां है ? तब घर के लोगां ने कहा- कौन से साहब ? तो नाम लेकर पूछा, तो घरवालों ने कहा-उन्हे गुजरे सात साल हो गये। इन लोगों ने पूछा- किस कारण से इनकी मृत्यु हुई ? घर के लोगों ने कहा- उन्हें डायबेटीज, ब्लडप्रेशर, हार्ट आदि की बिमारी थी। इन लोगोने उनकी दिनचर्या के बारे में पूछा, तो कहते हैं- उनका पलंग पर बैठना-सोना, खुर्ची पर बैठना और यही घर ही में पेशाब,शौच को जाना ! समय पर भोजन आदि ऐसी इनकी दिनचर्या थी।

वहां से दूसरे इंजिनिअर के गांव गये। वहाँ जाने के बाद पूछा - तो पता चला कि उनका भी हाल वैसा हुआ और वे भी वैसे ही मर गये। ऐसे दस इंजिनियर के पास गये। बैठने वाले आठ साहब मर गये थे। एक दो साल के अन्तर से आठ इंजिनियर की मृत्यु हुयी थी। उनमें से दो ही जीवित थे। जब उन दोनों की दिनचर्या के बारे में पूछा, तब उन्होंने कहा - मुझे प्रातः चार बजे उठने की आदत है। मैं उठकर गाय को घास (कडबी) डालता हूँ ? फिर कुछ घूमता हूँ। बगीचे में पौधों को पानी डालता हूँ। दोपहर मे सोता नही। हमारे सुपुत्र ने दुकान खोला है, उनका डिब्बा लेकर जाता हूँ। गाय का दूध निकालता हूं, खेत जता हूं। ऐसा दोनों इंजिनियर ने अपनी दिनचर्या के बारे में बताया। इस उदाहरण से पाठकों का समझ में आया होगा कि खाली बैठकर जीना जीवन के लिए कितना घातक हो सकता है ? अतः हम सदैव श्रम करते रहें। ❁

thearyasamaj.org

जीवन संग्राम में विजय पाना हो तो...!

– डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

जीवन यह एक संग्राम है, जहां जय-पराजय दोनों ही मिलते हैं। जिसमें धैर्य-धारण करने वाला योद्धा पराजित होने पर भी साहस नहीं छोडता। वह पराजय के कारणों को जान उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है और दोगुने उत्साह से विजय अभियान को पूरा करने की तैयारी में लग जाता है। उसका स्वभाव कन्दुक (गेन्द) की भांति होता है। जितना कन्दुक को नीचे दबायेंगें, वह उतनी ही ऊपर उठेगी। ऐसे ही उत्तम जन आपत्ति में भी अपना धैर्य नहीं खोते। राजा ब्रूस ने अपने शत्रुओं से सात बार हार खाई। वह निराश होकर एक गुफा में शत्रुओं से बच विश्राम कर रहा था। उसने देखा कि एक मकडी जाल बुनती हुई नीचे गिर पडी, परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी और फिर अपने कार्य में जुट गई। ऐसा सात बार हुआ। आठवी बार वह अपने उद्देश्य में सफल हुई और जाल का ताना-बाना बुन ,जहां उसे जाना था वहां पहुंच गई। राजा ब्रूस के मस्तिष्क में बिजली सी कौन्धी। उसने अपने आप से कहा-जब यह क्षुद्र कीट अनेक बार अपने लक्ष्य को पाने में असफल रहने पर भी अन्त में अपने गन्तव्य स्थल को पहुंच गया, तो मैं क्यों निराश हो कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हुआ यहां पडा हूं ? उसने अपने शस्त्रों को सुसज्जित किया और सेनासंग्रह कर शत्रुदल को परास्त कर राज्यश्री को पुनः प्राप्त कर लिया।

दीवार पर छोटी सी चींटी अपने भार से कई गुणा भारी भरकम दाना लेकर चढती है। ऊपर जाकर वह नीचे फिसल जाती है। परन्तु फिर उसी साहस से दाना उठाकर ऊपर चढना प्रारम्भ कर देती है और अन्त में अपनी मंजिल तक पहुंच ही जाती है।

मोतियों की तलाश में एक गोताखोर ने समुद्र में डुबकी लगाई। तलहटी में रेंगते हुये उसने कुछ सीपियों को उखाड अपनी झोली में भरा और ऊपर चला आया । सभी लोग उत्सुकता से देख रहे थे कि देखें, कौन सा मोती हाथ लगा। परन्तु वहां तो कानी कौडी भी नहीं थी। अपना प्रयत्न असफल हुआ देख गोताखोर ने फिर डुबकी लगाई। परिणाम वही रहा। परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी और अन्तिम बार एक बहुमूल्य मोती उसकी झोली की शोभा बढा रहा था।

मैडम क्यूरी और उसका पति रेडियम प्राप्त करने के लिये दिन रात लगे हुये थे। भट्टी जल रही थी। सारा ईंधन समाप्त हो गया। उनकी आर्थिक स्थिति भी दयनीय हो चुकी थी। और कोई उपाय न देख उन्होंने अपने घर की फर्नीचर ही भट्टी में झोंक दिया। अग्नि शान्त होने पर उन्होंने

thearyasamaj.org

एक चमकते हुए पदार्थ को पाया, जिसे **'रेडियम'** कहा गया और सारा संसार जिससे परिचित है।

संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। प्रथम वे हैं, जो किसी विघ्न बाधा के भय से अच्छे कार्य को प्रारम्भ करते ही नहीं। कुछ ऐसे हैं, जो अच्छे कार्य को प्रारम्भ करते ही नहीं। कुछ ऐसे हैं जो अच्छे कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं, परन्तु बीच में विघ्न बाधा के आ जाने पर उसे छोड देते हैं। तीसरे प्रकार के वे लोग हैं जो कार्य प्रारम्भ करने से पहले उसका भली भांति विचार करते हैं और जब कार्य प्रारम्भ किया जा चुका होता है, जब बीच में कितनी ही बार विघ्न बाधायें आयें, वे उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। इनकी गणना श्रेष्ठ जनों में होती है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है, जिसमें निम्न गुण हों -

उद्यमः साहसं धैर्य बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥

पुरूषार्थ से ही सभी कार्यों की सिद्धि होती है, शेख चिल्ली के समान मन के मोदक बनाने से नहीं। सोये हुये सिंह के मुख में हरिणादि स्वयं आकर प्रविष्ट नहीं होते। पुरूषार्थी ही सब सुखों को प्राप्त करता है। शत्रुजन, नौकर और बन्धु बान्धओं द्वारा दबाया नहीं जा सकता

लोक में यह प्रसिद्ध है-**'हिम्मत का है राम हिमायती।'** परमात्मा हिम्मत, साहस करनेवाले की ही सहायता करता है। जिन्होंने साहस को अपना सखा बनाया, वे वैतरणी को पार कर अपनी मंजिल तक जा पहुंचे। जिसने समुद्र में डुबकी लगाई, उन्हें मोती मिले। जो किनारे पर बैठे रहें, उन्हें कोडियां ही प्राप्त हुई।

आलस्य साहस का शत्रु है। **'पापो नृषद्वरो जनः'** आलसी मनुष्य पापी होता है। आलसी को विद्या नहीं आती। बिना विद्या के धन नहीं प्राप्त होता और बिना धन के सुख नहीं मिलता।

जिस प्रकार समुद्र में जहाज के टूट जाने पर भी नाविक समुद्र से पार जाने का हर सम्भव प्रयत्न करते हैं, वैसे विपत्ति काल में धैर्य को नहीं छोडना चाहिये। धैर्यवान् पुरूष कभी न कभी दुःखसागर से पार हो ही जाता है। महापुरूषों का यही लक्षण है-**विपत्ति में भी धैर्य का परित्याग नहीं करते।**

जिसमें पास बुद्धि है, वही बलवान है। धन सम्पत्ति भी बुद्धि द्वारा प्राप्त होती हैं। बुद्धि का उपयोग कर मानव ने अथाह जलराशि को पार करने के लिए जलयान, आकाश मार्ग से जाने के लिये वायुयान और स्थल मार्ग के लिये रेलगाडी, मोटर आदि का आविष्कार किया। उसने जीवन को सुखी बनाने के लिये अग्नि, वायु, जलादि को अपने अनुकूल बनाकर अनेक कार्यों में प्रयुक्त किया। जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिये बल-पराक्रम का होना

thearyasamaj.org

बहुत आवश्यक है। बल विज्ञान से भी बढकर है। एक बलवान् सैंकडों बुद्धिमान को धाराशायी कर सकता है। इसीलिये उपनिषद में कहा है **'बलमुपास्व'** शक्ति की उपासना करो। शरीर के सामर्थ्य को शक्ति कहते हैं, जिससे किसी भी कार्य को बिना बाधा के पूरा किया जा सके। शक्ति की प्राप्ति के लिये आहार-विहार में पूरी सावधानी रखनी चाहिये। साथ ही शारीरिक श्रम, व्यायाम आदि को भी जीवन का अंग बनाने की आवश्यक्ता है। शक्ति का उपयोग किसी अच्छे कार्य में लेना ही पराक्रम कहलाता है, जिसे ***वीरता*** भी कहा जा सकता है । जो जीवन संग्राम में सभी चुनौतियों को सहन करता हुआ निरन्तर आगे ही आगे बढता जाये उसे वीर करते हैं।

जिस पुरूष में ये छः गुण होते हैं, भाग्य भी उसी का साथ देता है। लक्ष्मी उसकी दासी बनकर रहती है। लोग उसी का गुणगान करते हैं। ऐसा पुरूष अपने यश कीर्ति की अमिट छाप छोड जाता है जिससे भावी सन्तति प्रेरणा प्राप्त करती है

पुरूषार्थ उसी का सफल होता है, जो साधुजनों के बताये हुये मार्ग पर चलते हैं। इसके विपरीत आचरण पागलपन ही कहा जायेगा। जो विद्वज्जनों का सत्संग नहीं करता या देशदेशान्तर में गमनागमन नहीं करता, उसकी बुद्धि जैसे जल में गरम घी का बिन्दू डालने पर वह सिकुड जाता है, उसी प्रकार जड हो जाती है और जो विद्वानों का संग करता है तथा देश-देशान्तर में जाता है, उसकी बुद्धि जल में तेल का बिन्दु डालने पर जैसे फैल जाता है, वैसे ही विस्तृत हो जाती है। इसलिये जीवन संग्राम में विजय पाने के लिये बुद्धि और पुरूषार्थ सहित छः गुणों का होना आवश्यक है।

-११९, गुरूकुल, गौतमनगर, नई दिल्ली

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली

विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। हाल ही में आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मीआंवला तेल,आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी है। अतः सभी से निवेदन है कि इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें। साथ ही हवन के लिए विभिन्न जडी बुटीयों से संमिश्रित **'यज्ञ सौरभ'** यह सुगन्धित सामग्री भी बनाई गयी है। इसे आर्य समाजें अधिक मात्रा में खरीदें । आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क करें व अन्यों को भी आयुर्वेदिक औषधियों से लाभान्वित करें। आर्य समाज के पदाधिकारी अपनी समाजों में इन यज्ञ सामग्री व औषधियों कों विक्रय हेतु रखे।

निवेदक - मन्त्री, आर्य समाज परली वैजनाथ

thearyasamaj.org

वैदिक व्याख्यानमाला को राज्य में भारी सफलता

विद्यालय व महाविद्यालयों अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में मानवता, सदाचार संवर्धन, सुसंस्कारों तथा वैदिक तत्त्वज्ञान का बीजारोपण हो, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दो भागों में आयोजित राज्यस्तरीय वैदिक व्याख्यानमाला को सर्वत्र भारी सफलता मिली। दो जीप वाहनों के माध्यम से १२ विद्वान् व भजनोपदेशकों विविध ग्रामों व नगरों में पहुंचकर वहां के विद्यालयों व महाविद्यालयों में व्याख्यानों व भजनों द्वारा छात्रों का प्रबोधन किया गया।साथ ही सभी शिक्षा संस्थानों को सत्यार्थ प्रकाश, धर्म और विज्ञान ये ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द की प्रतिमायें भेंट के रूप में दिये गये। अन्य वैदिक साहित्य भी बच्चों में अल्पदरों में वितरीत हुए।

इस अभियान में विद्वान सर्वश्री पं. सुरेशचंद्रजी शास्त्री (उ.प्र.) पं. सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक), डॉ. ब्रह्ममुनिजी, पं. लक्ष्मणराव आर्य (गुरूजी), प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री, तानाजी शास्त्री, तथा भजनोपदेक सर्वश्री पं. प्रतापसिंहजी चौहान, पं. वैजनाथरावजी करकेले, पं. सोगाजी घुन्नर, पं. सुभाषजी गायकवाड, पं. आर्यमुनिजी आदि उपस्थित थे।

व्यायाम व युवाचरित्र निर्माण शिविर संपन्न

गुरूकुल आश्रम आमसेना के तत्त्वावधान में ग्राम देवरी (छत्तीसगढ) में हाल ही में पंचदिवसीय **योग व्यायाम शिविर** सम्पन्न हुआ जिसमें ६०० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

इसके साथ ही विजयादशमी के पावन पर्व पर गुरूकुल आश्रम में ११ से १७ अक्टूबर २०१३ के दौरान **युवा चरित्र निर्माण शिविर** विभिन्न कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया गया। इस शिविर में लगभग २० छात्रों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुरूकुल होशंगाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

होशंगाबाद के समीपस्थ नर्मदा तट पर सौ वर्ष पूर्व संस्थापित आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.) का १०२ वां वार्षिकोत्सव दि. १३,१४ व १५ दिसम्बर २०१३ को बडे हर्षोल्हास के साथ मनाया गया।

आर्य जगत् के मान्यवर अनेकों विद्वानों, आर्य भजनोपदेशकों, राजनेताओं तथा विशिष्ट सहयोगियो के सान्निध्य में आयोजित इस वार्षिकोत्सव पर विभिन्न

thearyasamaj.org

उद्‌बोधक व प्रेरक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन, शोभायात्रा, विविध सम्मेलन तथा अभिनन्दन समारोह आदि कार्यक्रम काफी प्रभावशाली रहे । गुरूकुल संस्थान के अध्यक्ष स्वामी ऋतस्पतिजी परिव्राजक की अध्यक्षता में आचार्य सर्वश्री सत्यसिन्धुजी, योगेन्द्रजी याज्ञिक, उमेशकुमारजी, अविनाश विक्रमदेव, राजेन्द्रार्य आदियों ने इस वार्षिकोत्सव समारोह को सफल बनाया।

शोक समाचार

प्रा. शिवाजीराव अंबेसंगे का निधन

वैदिक विचारों के प्रबल पक्षधर, आर्य समाज,उदगीर जि. लातूर के सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्य प्रा.श्री शिवाजीराव संभाजीराव अंबेसंगे का गत दि. १ दिसम्बर २०१३ को दोपहर २.३० बजे हृदयगति रूक जाने से अकस्मात् निधन हो गया। वे ७३ वर्ष के थे।

श्री अंबेसंगे अपने पीछे विवाहित दो पुत्र एवं ३ कन्याएं, दामाद, पुत्रवधुओं, तथा पौत्र, दौहित्रादि से भरा विशाल परिवार को छोड संसार से विदा हुए । उदगीर आर्य समाज को उन्नत करने में तथा गतिविधियो को बढाने में उनका अधिकतर योगदान रहा है। मनुष्यकृत जातिव्यवस्था को समूल नष्ट करने में भी अग्रभागी रहें। उन्होंने अपने सहित पुत्र व कन्याओं के अन्तर्जातीय विवाह किये तथा इस कार्य के लिये अन्यों को भी प्रेरित किया।

सुप्रसिद्ध आर्य शिक्षालय **"हुतात्मा श्यामलाल स्मारक"** शिक्षा संस्थान के कनिष्ठ महाविद्यालय में आप हिन्दी के प्राध्यापक रहे । वर्ष १९९८ ईसवी में सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे आर्य समाज के साथ ही लातूर जिले में सार्वजनिक वाचनालयों का अभियान बढाने में संलग्न रहे। मृत्यु से कुछ समय पूर्व वे उदगीर के समीपस्थित सोमनाथपुर ग्राम में पं. नरेंद्र ग्रंथालय के निरीक्षण हेतु गये थे। तभी उन्हें हृदयाघात हुआ। तुरन्त अस्पताल पहुंचाने पर चिकित्सकोंने उन्हें मृत घोषित किया।

दिवंगत अंबेसंगे के पार्थिव पर दूसरे दिन प्रातः ११ बजे प्रा. अखिलेश शर्मा, प्रा.डॉ.नरेंद्र शिन्दे, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, पं. धर्ममुनिजी, श्री टोंपे, श्री आनंद हुरदळे आदियों ने पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये। इस अवसर पर प्रान्तीय सभा व आर्य समाज के पदाधिकारी, सभी क्षेत्र के प्रतिष्ठित मान्यवर उपस्थित थे। दिवंगत श्री अंबेसंगे को सभा की ओर से भावपूर्ण श्रद्‌धांजलि !

thearyasamaj.org

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

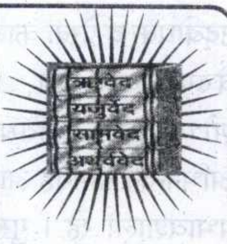

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.८/टी.इ. (७)१८७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश - सूक्ष्म बुद्धीद्वारे ईश्वरानुभूती -

एष सर्वेषु भूतेषु गुढोत्मा न प्रकाशते ।
दृश्यते त्वग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ- हा सर्वव्यापक परमात्मा सर्व जीवांच्या व जडचेतन तत्वांच्या आत दडलेला आहे. आणि चोहीकडे व्यापक असल्यामुळे प्रकट होत नाही. हा तर अग्रगामी विषयांपासून 'अलिप्त आणि सर्व विषयांद्वारे ग्रहण करण्यात समर्थ" सूक्ष्म अशा बुद्धीद्वारे व सर्वात सूक्ष्मदर्शी तपस्वी विद्वान लोकांद्वारेच प्रत्यक्ष अनुभवला जाऊ शकतो.

(कठोपनिषद-२/१५)

दयानंदांची अमृतवाणी

ईश्वर उपासनेचे फळ

ईश्वर उपासनेचे फळ असे की ज्याप्रमाणे थंडीने कुडकुडणारा माणूस अग्नीजवळ जाताच त्याची थंडी एकदम नाहीशी होते. त्याप्रमाणे परमेश्वराच्या सान्निध्यात गेल्यामुळे सर्व दोष व दुःखे नाहीशी होऊन परमेश्वराच्या गुण , कर्म, स्वभावाप्रमाणे जीवात्म्याचे गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र होतात. म्हणून परमेश्वराची स्तुती, प्रार्थना व उपासना अवश्य केली पाहिजे. उपासनेची इतर फळे जरी दूर ठेवली, तरी उपासनेमुळे आत्म्याचे बळ इतके वाढते की पर्वतप्राय दुःख कोसळले तरी तो घाबरत नाही आणि सर्व कांही सहन करण्याचे सामर्थ्य त्याला प्राप्त होते. ही कार्य लहानसहान गोष्ट आहे ? जो परमेश्वराची स्तुती, प्रार्थना व उपासना करीत नाही, तो कृतघ्न व महामूर्खही असतो. कारण ज्या परमेश्वराने प्राणिमात्राच्या सुखासाठी सर्व पदार्थ निर्माण केले आहेत, त्याच्या गुणांना विसरणे, देवच न मानणे, ही कृतघ्नता व मूर्खता आहे.

(सत्यार्थ प्रकाश-सातवा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः ती घरे स्मशानप्रमाणे...

न विप्रपादोदककर्दमानि न वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि ।
स्वाहा-स्वधाकार-विवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि ॥

ज्या घरांमध्ये ज्ञानी-महाविद्वान व आचारशुद्ध अशा विद्वान (ब्राह्मण) सत्पुरूषांचे पाय धुवून त्यामुळे चिखल निर्माण होत नाही, जिथे वेदादी शास्त्राच्या उद्घोषामुळे गर्जना होत नाही, ज्या ठिकाणी नेहमी यज्ञाचा **स्वाहा** असा ध्वनी ऐकू येत नाही व जिथे आई-वडील, गुरू व इतर वृद्धांची आदरपूर्वक सेवा केली जात नाही. अशा प्रकारची घरे म्हणजे साक्षात् स्मशानस्थानेच होय.

परिचय एका लोकोपयोगी आर्य समाजाचा

आर्य समाज पिंपरी (पुणे) ची प्रेरक गाथा

- उत्तम जी. दंडिमे

लुप्त होत चाललेल्या वेदांचे ज्ञान सोप्या व सरळ भाषेत जगाला करून देण्याचे महान कार्य महर्षी दयानंदांनी केले. त्यासाठी त्यांनी आपले संपूर्ण जीवन अर्पण केले. त्यांनी इ.स.१८७५ साली गुढी पाडव्याला काकडवाडी, मुंबई येथे **'आर्य समाज'** या संस्थेची स्थापना केली. आर्य म्हणजे अशा श्रेष्ठ ! अशा 'श्रेष्ठ' लोकांचे संगठन म्हणजेच होय **आर्य समाज** ! समाजाच्या दहा सुवर्ण सिद्धांतात (नियमांत) महर्षी दयानंदांची दूरदृष्टी दिसते. **'सत्यार्थ प्रकाश'** सारख्या दिव्य ग्रंथाची निर्मिती करून त्यांनी समग्र मानव जातीवर अनंत उपकार केले आहेत. **'कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्'** अर्थात् विश्वाला श्रेष्ठ बनवणे, हे याचे ध्येय आहे. स्वामीजी म्हणतात- **प्रत्येकाने आपल्याच उन्नतीत संतुष्ट न राहता सर्वांच्या उन्नतीत आपली उन्नती समजली पाहिजे.** सत्य, अहिंसा, मानवता, परोपकार, राष्ट्रभक्ती, मनुष्य जातीची निष्काम सेवा आणि मोक्ष मिळवण्यासाठी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नती साधणे, हा आर्य समाजाचा मुख्य उद्देश आहे. जाती-पाती विरहित व महिला-पुरूष समानतेवर आधारित आदर्श समाजव्यवस्था निर्माण करणे, हे या संस्थेचे ध्येय आहे. आज संपूर्ण जगभर आर्य समाजाच्या मोठ्या प्रमाणावर शाखा आहेत.

पिंपरी (पुणे) शाखेचा परिचय-

फाळणीच्या वेळी पाकिस्तानातून विस्थापित होऊन कांही सिंधीबांधव पुण्यातील पिंपरी भागात आले. पारिवारिक व आर्थिक स्थैर्य प्राप्त झाल्यावर त्यांनी

thearyasamaj.org

इ.स.१९४९ च्या मार्च महिण्यात गुढी पाडव्याला **आर्य समाज पिंपरी** शाखा स्थापन केली. स्व बिहारीलालजींच्या पादत्राणांच्या दुकानात पहिले हवन (यज्ञ) व सत्संग झाला. दि.२३ डिसेंबर १९५० रोजी स्वामी श्रद्धानंदाच्या बलिदान दिनाचे औचित्य साधून एका स्वतंत्र खोलीत आर्य समाजाचे नियमित सत्संग व कार्य सुरू झाले. सुरूवातीला स्व. वेढारामजी संतरामजी आर्य, स्व. राजलदासजी वाधवानी (स्वामी ब्रह्मानंदजी), बिहारीलालजी, शांतिप्रकाशजी, ओमप्रकाशजी गुगलानी, मोतीरामजी गुप्ता, चैनरायजी, सितलदासजी फेरवानी, छ्गुमलजी, व्यापारीमलजी, रविमलदासजी तेजवानी, राजारामजी, भगवानदासजी, नानुमलजी, हुकुमतरॉय गणेशवानी आणि हरगुणलालजी गणेशवानी यांनी आर्य समाज पिंपरीचा पाया रचला.

प्रोफेसर ऋषिनाथजी आर्य हे स्थापना काळात आर्य वीर दलाच्या शाखा चालवित असत. त्यात योगासन, प्राणायाम, व्यायाम व विविध खेळ इत्यादी शिकविले जात होते. प्रारंभीच्या काळात आर्य वीर श्री कृष्णचंद्र आर्य, स्व. सदरोमलजी, स्व. जेठानंदजी, स्व. तीर्थदासजी, स्व. ज्ञानचंदजी, स्व. केवलरामजी, स्व. हुकूमतरायजी, स्व. सुरेशकुमारजी, सर्वश्री पेशुमलजी, मुरलीधरजी, यशपालजी आणि सेऊरामजी हे होते. या सर्वांनी मधल्या काळात आर्य समाजाच्या कार्याचा विस्तार केला.

आर्य समाज पिंपरीच्या स्थापना काळात पिंपरी व चिंचवड या ग्रामपंचायती होत्या. नंतर त्यांचे नगरपालिका व आता महानगरपालिकेत रूपांतर झाले आहे. शहराच्या विकासाबरोबरच या समाजाचा ही विकास होत गेला. प्रारंभीच्या काळात सर्व सिंधी बांधव कृष्णजन्माष्टमी, होळी उत्सव, दीपावली, (ऋषिनिर्वाण) इत्यादी पर्व एकत्रित साजरे करीत असत. त्यानिमित्ताने आर्य समाजी व गैर आर्य समाजी सर्व एकत्र येत असत. आजही या परंपरा चालू आहेत. उलट त्यात मराठी माणसांचा सहभाग ही वाढलेला आहे. एकेकाळी फक्त विस्थापित बंधु-भगिनी हे सण-उत्सव, सत्संग यांसाठी आर्य समाजात एकत्र जमत असत. सुरूवातीला पुरोहिताचे कार्य स्वतः श्रीमान वेढारामजी करीत असत. त्यानंतर १९७९ साली पं. जगदीचंद्र वसू आले. त्यांच्या नंतर एका वर्षाने म्हणजेच १९८० सालापासून आजपर्यंत पं. विश्वनाथजी शास्त्री सारखे सुस्वभावी व समर्पित विद्वान् पुरोहित म्हणून लाभले. आहेत.त्यांचा वावर संपूर्ण पिंपरी-चिंचवड महानगरात व त्याबाहेर सुद्धा आहे. संस्कार व संपर्कासाठी ते अहोरात्र प्रयत्न करीत असतात. कार्य वाढल्यामुळे आज आर्य समाज पिंपरी साठी सहाय्यक पुरोहित म्हणून पं. दुष्यंत शास्त्री यांची नेमणूक करण्यात आली आहे.

thearyasamaj.org

समृद्ध ग्रंथालय-

इ.स. १९५६ साली आर्य समाजातर्फे वैदिक पुस्तकालय व मोफत वाचनालयाची स्थापना करण्यात आली. या पुस्तकालयास राज्य शासनाचा सर्वोच्च 'अ' दर्जा प्राप्त आहे. जवळपास ३०,००० पुस्तके ग्रंथालयात उपलब्ध आहेत. संपूर्ण महानगरातून ५०० च्या जवळपास वाचक सभासद आहेत. ग्रंथालयात वेद, उपनिषदे, शास्त्र, प्रबंध ग्रंथ, संपूर्ण कोष इत्यादींसह धार्मिक, आध्यात्मिक, कथा कादंबऱ्या, सामाजिक, राजकीय, प्रबोधनपर ग्रंथ उपलब्ध आहेत. विद्यार्थी वाचकांच्या विनंतीवरून स्पर्धा परीक्षेची पुस्तके उपलब्ध करून देण्यात आलेली आहेत. ग्रंथालयात महिला विभाग, बाल विभाग, संदर्भ विभाग व सर्वसाधारण विभाग स्वतंत्र आहेत. निःशुल्क वाचकांसाठी १६ दैनिके, ५२ त्रैमासिके, मासिके, पाक्षिके व साप्ताहिके उपलब्ध आहेत. संपूर्ण पिंपरी चिंचवड महानगरात सर्वात आधुनिक व संगणक प्रणालीने परिपूर्ण असे हे मोठे एकमेव ग्रंथालय आहे.

स्पर्धा परीक्षा देणाऱ्यांसाठी तसेच पीएच.डी (संशोधन) करणाऱ्यांसाठी येथे स्वतंत्र व्यवस्था आहे. संस्थेतर्फे आर्य समाजाशी निगडीत विषयांवर संशोधन करणाऱ्यास रू. १०,००० ची शिष्यवृत्ती देण्यात येते. आतापर्यंत डॉ. दीपक देशपांडे यांनी आर्यसमाज व **शुद्धी चळवळ** या विषयावर संशोधन करून विद्यापीठास प्रबंध सादर केला आहे. त्यांना डॉक्टरेट उपाधी मिळाली आहे. सध्या दोन व्यक्ती संशोधन करीत आहेत. पिंपरी-चिंचवड व पुणे शहरातील गरीब व गरजू मुलांना संस्था मदत करीत आहे.चार दैनिक वर्तमान पत्रांपासून सुरू झालेले ग्रंथालय आज शहराचे भूषण ठरले आहे. सर्वात कमी ग्रन्थालय शुल्क (महिना फक्त रू.१०) सभासदांकडून घेतले जाते.

मान्यवरांचा सहभाग-

स.न् १९७९ सालानंतर **सर्वांच्या उन्नतीत आपली उन्नती समजावी;** या सिद्धांतांप्रमाणे बऱ्याच मराठी बंधु-भगिनींचा आर्य समाज पिंपरी या संस्थेशी संपर्क आला. त्यात माझ्यासह सर्वश्री सुभाष राजपूत, (स्व.)प्रा. एकनाथ नाणेकर, संजय आर्य, दत्ताजी सूर्यवंशी, अतुल आचार्य, कुमार पारोल, रवि भोसले, रमेश स्वामी, दिगंबर रिद्दीवाडे, दिनेश, संतोष, सौ. मंगलताई असे असंख्य सभासद आर्य विचारांशी जोडले गेले. सध्याच्या प्रगती कार्यात सर्वश्री मुरलीधर सुंदरानी, जगदीश वासवानी, हरिकृष्ण, ॲड. हरेश त्रिलोकचंदानी, धर्मदासानी, धर्मानी, नानकानी, नंदलालजी, सुरीजी इत्यादी असंख्य सदस्यांबरोबरच उपरोक्त मराठी बांधवांचाही सिंहाचा वाटा आहे.

शैक्षणिक कार्य-

thearyasamaj.org

शिक्षणाने मानवाला नवी दृष्टी मिळते व विचार बदलतो. अर्वाचिन शिक्षणाला प्राचीन अध्यात्माची जोड मिळाली, तर विद्यार्थ्यांची प्रगल्भता वाढते. याचा विचार करून गरीबांना ही परवडेल अशा शुल्कामध्ये **आर्य विद्या मंदिर** ही इंग्रजी माध्यमाची शाळा सुरू केली गेली. अवघ्या १४ विद्यार्थ्यांसह सुरू झालेल्या या शाळेची विद्यार्थी संख्या आज १५०० च्या वर आहे. यात ५५ च्या वर शिक्षक व शिक्षकेतर कर्मचारी आहेत. या आर्य शिक्षण संस्थेचे आज वटवृक्षात रूपांतर झाला आहे. प्राथमिक व माध्यमिक मुले-मुली एकत्र आणि वरिष्ठ व कनिष्ठ वाणिज्य महाविद्यालय (फक्त मुलींचे) सुरू आहे. आधुनिक विषयांसोबत वेद, उपनिषद व शास्त्रे तसेच अध्यात्माचे शिक्षण दिले जाते. शैक्षणिक विकासाबरोबरच शारीरिक मानसिक व आध्यात्मिक विकास साधून विद्यार्थ्यांचे चारित्र्य निर्माण केले जाते.

पिंपरी-चिंचवड महानगरातील सर्व स्तरातील विद्यार्थी याचा लाभ घेत आहेत. दहावी-बारावीनंतर काय करायचे ? याबद्दल मार्गदर्शन केले जाते. दरवर्षी परीक्षेनंतर विद्यार्थी व पालक यांचा मेळावा आयोजित करून त्यात करिअर गाईडन्स बद्दल मार्गदर्शन केले जाते.

विविध ग्रंथांची प्रकाशने-

आर्य समाजाचा स्वतंत्र असा प्रकाशन विभाग आहे. यात नवनवीन पुस्तके प्रकाशित केली जातात. पं. धर्मवीर आर्य यांच्या प्रेरणेने आणि श्रीपाद जोशी यांच्या कडून अनुवाद करून घेऊन महर्षी दयानंदकृत **'सत्यार्थ प्रकाश'** व **'महर्षि दयानंद जीवन चरित्र'** प्रकाशित करण्यात आले. दोन बहिनींच्या गोष्टी, ब्रह्मचर्यामृत, आर्य समाज एका दृष्टिक्षेपात, पूजा कोणाची ? छ. शिवाजी महाराज इत्यादी अनेक पुस्तके लोकार्पित केली गेली. आजही कांही ग्रंथ प्रकाशनाच्या मार्गावर आहेत.

आर्य समाजाच्या पुस्तकविक्री विभागात जवळपास २ ते ३ लाख रूपयांची पुस्तके विक्रीसाठी सदैव तयार असतात. नानफा नातोटा या तत्त्वावर ते वाचकांना उपलब्ध करून दिले जातात. हिंदी, मराठी व इंग्रजी भाषेतील आध्यात्मिक व वैज्ञानिक पुस्तके संपूर्ण भारतभरातील प्रकाशकांकडून मागविली जातात. तोटा सहन करून प्रचारासाठी वैचारिक साहित्यांचे निःशुल्क वितरण केले जाते. यामागे नागरिकांमध्ये देशभक्ती जागविणे व त्यांची चारित्रिक व नैतिक प्रगती व्हावी, हा उद्देश असतो.

सामाजिक कार्य-

आर्यवीर दलाच्या माध्यमातून दरवर्षी आठवडाभराचे **आर्य वीर युवक शिबिर** (निवासी) व मुलींसाठी **'आर्य वीरांगना निवासी शिबिर'** ही शिबिरे घेतली जातात. आजपर्यंत महानगरातील व बाहेरील हजारो विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी या

thearyasamaj.org

शिबिरांचा लाभ घेतला आहे. आंतरशालेय निबंध व वक्तृत्व स्पर्धा, दररोज योगासन वर्ग व योगासन स्पर्धा क्रीडा स्पर्धा यांचे देखील आयोजन केले जाते. स्वामी श्रद्धानंदांच्या बलिदानदिनानिमित्त दरवर्षी 23 {S¥+a a© r **'रक्तदान महायज्ञ'** या विशेष कार्यक्रमाचे आयोजन केले जाते. अंधश्रद्धा विरहित सण व उत्सवांचे वैज्ञानिक महत्व सांगून अशाप्रकारचे प्रेरक कार्यक्रम एकत्रित साजरे केले जातात.

दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग, पारिवारिक सत्संग व विशेष सत्संगांचे आयोजन करण्यात येते. श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह व डिसेंबर मध्ये वार्षिक उत्सवाच्या निमित्ताने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या माध्यमाने बाहेरील विद्‌वान बोलावून भजन व वेदोपदेशाचे कार्यक्रम महानगरात ठिक-ठिकाणी आयोजित केले जातात.

विविध राष्ट्रीय आपत्तीत सश्रम व आर्थिक सहयोग देण्यात येतो. किल्लारी व भूज येथील भूकंपात प्रत्येकी एक लाख रूपयाची मदत, बद्रीनाथ व केदारनाथ महापूर आपत्तीत समाजातर्फे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेच्या आपत्ती निवारण समितीस ५१ हजार रूपयांची मदत पाठविण्यात आली.

आंतरजातीय व आंतरधर्मीय विवाहाची व्यवस्था संस्थेकडून केली जाते. कायदेशीर पूर्तता झाल्यावर **'जाती-पाती तोडा समाज एकत्र जोडा'** योजनेअंतर्गत असे विवाह लावले जातात. मनुष्यकृत जातिव्यवस्थेला मूठमाती देऊन सर्वच व्यक्तींना व विद्वानांना यज्ञासह सर्व धार्मिक व्यवस्थेचे पौरोहित्याचे प्रशिक्षण दिले जाते. आर्य समाज जाती आधारित वर्ण व्यवस्था मानीत नाही. याचे ज्वलंत उदाहरण म्हणजे आमच्या आर्य समाज पिंपरीचे पुरोहित पं. विश्वनाथ शास्त्री हे आहेत. पिंपरी-चिंचवड महानगरातील नवकवींना प्रोत्साहन मिळावे, म्हणून **श्रावणधारा काव्य संध्या** हा कवितांच्या कार्यक्रम गेली वीस वर्षे निरंतर चालू आहे. यात यावर्षी ही ८६ व्या अखिल भारतीय साहित्य संमेलनाचे अध्यक्ष दि. २५ ऑगस्ट १३ नागनाथ कोतापल्ले यांना प्रमुख पाहुणे म्हणून आमंत्रित करण्यात आले होते.सध्या अनेक कुटूंबातील वातावरण दूषित बनत आहे. घरात कलह व अशांती आहे. आपली मुले वाममार्गाला लागत आहेत. याचा समाज व देशावर परिणाम विपरीत होत आहे. आर्य समाज आपल्या कार्याद्वारे यांवर मात करण्यासाठी प्रयत्न करीत आहे. पुणे हे शहर अविचारांच्या व कुसंस्कारांच्या प्रदूषणाने मुक्त होऊन ते चारित्र्यसंपन्न बनावे व्हावे, यासाठी आमचे प्रयत्न सुरू आहेत.

-'ओंकार' सर्वे नं. ४५/१,
बळीराज कॉलनी,
मंगल कार्यालया मागे,
रहाटणी, पुणे-१७
मो.९९२३६६१७१७

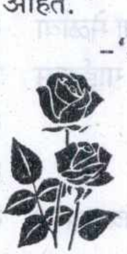

thearyasamaj.org

स्त्री सन्मान-सुखी गृहस्थाश्रमाचा आधार

-किशनराव राऊत (बोरगांवकर)

आजकाल समाजातील अंधःपतन रोखण्यासाठी कायदे भरपूर केले जात आहेत. कायद्यातून भ्रष्टाचार वाढत आहेत. भ्रष्टाचारातून शत्रुत्व वाढत आहे. घरोघरी दूरदर्शनद्वारे नंगानाच, गलिच्छ जाहिराती, व्यसनांची दुकाने, डान्सबार हे सर्व फोफावले आहे. मानवाचे जीवन विस्कळीत होत आहे. युवकांना आपल्या वैवाहिक जीवनासाठी युवती मिळणे अवघड झाले आहे. एक हजार पुरूषांमध्ये सरासरी अडीचशे युवक गृहस्थी जीवनाला मुकत चालले आहेत. त्यामुळे वाढत्या उद्वेगामुळे तारूण्याचा तोल बिघडला आहे. गुण्या गोविंदाने जगणे अवघड होत आहे. नीतीमत्तेचे शिक्षण घटत आहे. जन्म देणारी आईच अस्ताव्यस्त होत आहे. आत्मिक बल घसरत चालले आहे. स्त्री-पुरूष जीवन जगण्यात बेचैन झाले आहेत. आत्मिक समाधान मिळावे म्हणून लोक भोंदू बाबा व भोंदू महाराजांच्या जाळ्यात फसत आहेत. जातीजातीच्या नावे वेगवेगळ्या देवतांची मंदिरे उभी राहत आहेत. तरीदेखील स्त्री-पुरूष परिवार समाधानी नाहीत. प्रत्येक मंदिरात पुजाऱ्यांचा धंदा तेजीने वाढला आहे. त्यातच नैतिकतेचा अभाव आहे.

खरे तर साधुत्वाची व देवत्वाची कसोटी एकच आहे, ती म्हणजे-

जे का रंजले गांजले ।
त्यांसि म्हणे जो आपुले ॥
तोचि साधु ओळखावा ।
देव तेथेचि जाणावा ॥

ईश्वराने उभारलेला, निर्माण केलेला निसर्ग कळला पाहिजे, तरच सत्य समजेल, निसर्ग म्हणजे परस्परविरोधी घटक, शक्ती, यातील अंतर्गत समन्वय, संतुलन, सुसंवाद यांची जी अनंत साखळी आहे, ती समजावयाची असेल, तर निसर्गाशी एकरूप व्हावे लागेल. त्याला समजून घ्यावे लागेल. कारण निसर्ग हा आपल्या जीवनाचा घटक आहे. त्यातूनच आपली वाढ होत आहे. त्यातच आपल्या अस्तित्वाचे मूळ आहे. आपल्या मनाची पाटी लख्ख कोरी असल्याशिवाय ते सत्य आपल्यापर्यंत येऊ शकणार नाही. आपण वेगवेगळ्या जाती निर्माण करून त्यांमध्ये गुरफटल्यामुळे, तसेच वेगवेगळ्या देवी-देवतांमध्ये गुंतल्यामुळे आपल्यातील मानवता हरवत चालली आहे. निसर्गातील दोन परस्परविरोधी घटक व शक्ती या एकमेकाला नियंत्रित करीत असतात. म्हणूनच हे विश्व टिकून राहिलेले आहे. कुठलीही शक्ती आपल्या मर्यादेच्या बाहेर गेली, तर ती आपोआप नष्ट होते. म्हणूनच सुखी व्हायचे

thearyasamaj.org

असेल तर जीवनात समतोल हवा हे जग म्हणजे परस्परविरोधी शक्तींचा समूहांचा सुमेळ आहे. या जगात कुणीही कुणाचा शत्रू नाही. आपल्या वाट्याला येणाऱ्या प्रतिकूल घटना आपले अस्तित्व विकासासाठी आवश्यकच असतात. सत्य -असत्य, अंधार-प्रकाश, जीवन-मृत्यू, सुख-दुःख या परस्पराविरोधी वाटणाऱ्या घटना एकच असतात. त्यासाठी आपण असत्य जाणले तर सत्यही जाणतोच ! जीवन आणि मृत्यूही परस्परावलंबी आहेत. ज्या क्षणी आपण जन्मतो, त्या क्षणी आपला मृत्यूही ठरलेला असतो. आपली जीवनदृष्टी अशी विकसित झाली म्हणजे आपला प्रवास अशांततेकडून शांततेकडे सुरू होईल. उच्चतम नैतिक विकास हाच आपल्या जीवनासाठी स्वर्ग होऊ शकेल. प्रत्येकाने रंजल्या गांजल्याची सेवा केल्यास आपले शरीर बलवान होईल. त्यामुळे कष्ट करण्याची ताकद येईल. जीवन सुधारेल व जीवनात आनंद राहील.

निसर्गात स्त्री-पुरूषाचा नवनिर्मितीसाठी उगम झालेला आहे. इतर प्राणिमात्रांमध्ये तो श्रेष्ठ आहे. परंतु सतत मनुष्य प्राण्याला सत्संगात मग्न राहिले, तर तो श्रेष्ठत्वाच्या शिखरावर पोहचू शकेल. परंतु तसे होत नाही कारण त्याला पाहिले असत्य समजले पाहिजे. ते समजले नसल्यामुळे स्त्री-पुरूषात अशांती आहे. निसर्गतः पुरूषांपेक्षा स्त्री श्रेष्ठ समजली जाते. कारण तिच्या गर्भात स्त्री आणि पुरूष जातीचा जन्म होतो. ते गर्भात असल्यापासून संस्काराचे धडे मिळाले, तर अधपतन टळेल. जर स्त्रीच बिघडली तर चांगल्या पुरूषाला जन्म कसा देईल ? म्हणून तिला विवाहानंतर पत्नी हे नाव दिलेले आहे. कारण ती पतीला पतनापासून वाचवणारी आहे व पतीची पत समाजात वाढवणारी आहे. म्हणूनच मानवतेची निर्मिती तिच्यात आहे. पुरूषाकडून स्त्रीच्या गर्भात जे बीज पडते, तीच त्या बीजाला वाढवते. संस्कारित करते पाच वर्षे स्त्रीच्या संस्कारात सतत स्त्री किंवा पुरूष जातीचे मूल तिच्याजवळ असते, त्या अगोदर नऊ महिने ते गर्भात असते. जसे कौशल्येने रामाला, देवकीने कंसाच्या तुरूगांत कृष्णाला जन्म दिला, तिचे विचार गर्भात कृष्णाला लाभले व पालनपोषण यशोदेन केले व कृष्णाची मामी राधाने त्याचे लाड केले. पुढे कृष्णाची पत्नी रूक्मिणीने प्रद्युम्न हा आदर्श पुत्र दिला. जिजाबाईने शिवाजी राजा घडविला. सर्व ठिकाणी पुरूषाला मोठे करण्यास स्त्रीचाच हात असतो म्हणतात. म्हणूनच मनूच्या आचारसंहितेत म्हटले आहे.-

यत्र नार्त्रस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
सर्वास्तत्राफलाः क्रिया ।

(मनुस्मृती ३.५६)

thearyasamaj.org

ज्या कुळामध्ये स्त्रीची पूजा अर्थात सत्कार होतो, त्या कुळात दिव्य गुण, दिव्य भोग आणि उत्तम संतती इत्यादी निवास करतात. आणि ज्या कुळात स्त्रियांचा सत्कार होत नाही, त्या परिवारात , त्या घरात कोणीही सुखी, समाधानी आनंदी राहू शकत नाही. त्यासाठी स्त्रीला नीतीमत्ता व असत्य काय आहे ? हे समजले तर पुरूषाच्या अत्याचारी वृत्तीला भीती बसेल. सावित्रीबाई फुले यांनी स्त्री शिक्षणाला महत्व यासाठीच दिले होते. की **स्त्री सुधारली तर तिचे पुरूष जातीचे मूल ही सुधारेल व स्त्री जात ही बलवान होईल.** आर्य समाजाचे संस्थापक व वेदोध्दारक महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी देखील स्त्रीशिक्षणाला सर्वाधिक महत्व दिले आहे. वैदिक काळात स्त्री शिक्षणाला प्राधान्य होते. मुला-मुलींच्या एकत्रित शिक्षणाला विरोध दर्शविलेला होता. पाच किलोमीटर किंवा पाच मैल अंतराने त्यांचे गुरूकुल असावे तरच नैतिकता टिकून राहिल व वय परिपक्क्व होईपर्यंत ते विद्यार्थी एकत्र येऊ शकत नाहीत. पाश्चिमात्य एकत्रित शिक्षणपद्धती सर्वांच्या मुळावर आलेली आहे. त्यामुळे एकतर्फी प्रेमातून एकमेकांच्या मनासारखे नाही झाले, तर जास्त स्त्रीचाच नाश होऊ लागला आहे. नीतीमूल्ये नसल्यामुळे कायदा कांहीच करू शकत नाही. पुरूष जातीला शिक्षा झाल्याचा फक्त आनंद होईल, परंतु तोपर्यंत स्त्री जातीचा नाश झालेला असतो.

स्त्री ही दोन परिवाराचा उद्धार करणारी शक्ती आहे. आई-वडिलांकडे मोठी होते. शिक्षण घेते व सासरी सासू-सासरे, नणंद, जाऊ वगैरेमध्यें रमते त्या घराला आनंद देते . परंतु सध्याच्या काळात स्त्रिया -स्त्रियां मध्ये तंटे वाढले आहेत. स्त्री ही स्त्रीला नष्ट करत आहे. स्त्री-पुरूषामध्ये ही भांडणे वाढत आहेत. थकलेल्या सासू-सासऱ्यांना सांभाळणे कठीण झाले आहे. सुखी संसार नष्ट होत चालला आहे. भविष्यातील दुष्परिणामांची चिंता नसते. त्यामुळे सर्व घरे दुःखी आहेत. नरकेमय होत चाललेले आहे. त्यासाठी स्त्री सुधारेल तर सर्व जग सुधारेल. स्त्रीने जाती-पातीच्या अंधश्रद्धेतून दूर राहावे. गुणेकर्मानुसार विवाह व्हावेत, तेथे कपोलकल्पित जाति व्यस्थेला थारा मिळू नये. तो राष्ट्राला लागलेला कलंक आहे. राष्ट्राला लागलेली ही कीड आहे. त्यामुळे वारंवार परकीय शत्रू हल्ले होत आहेत. शासनाला जातिव्यवस्था मान्य नाही. म्हणून जाती तोंडून विवाह व्हावेत, हा नियम केलेला आहे. परंतु मता-मतांच्या आधारे जे शासनात निवडून जातात. तेच राष्ट्राला अधःपतनाकडे नेत आहेत. त्यासाठी जे जातीयवादी नाहीत, निर्मळ व चरित्रवान आहेत, असत्यापासून दूर आहेत. अशांनाच मतदारांनी नेते म्हणून निवडून द्यावेत. त्यामुळे नीतिमत्ता वाढेल व स्त्रियांचे अधःपतन ही रोखले जाईल.

-**'क्रांतिकुंज',सीतारामनगर, लातूर**
मो. ९४२२९६८६७४

thearyasamaj.org

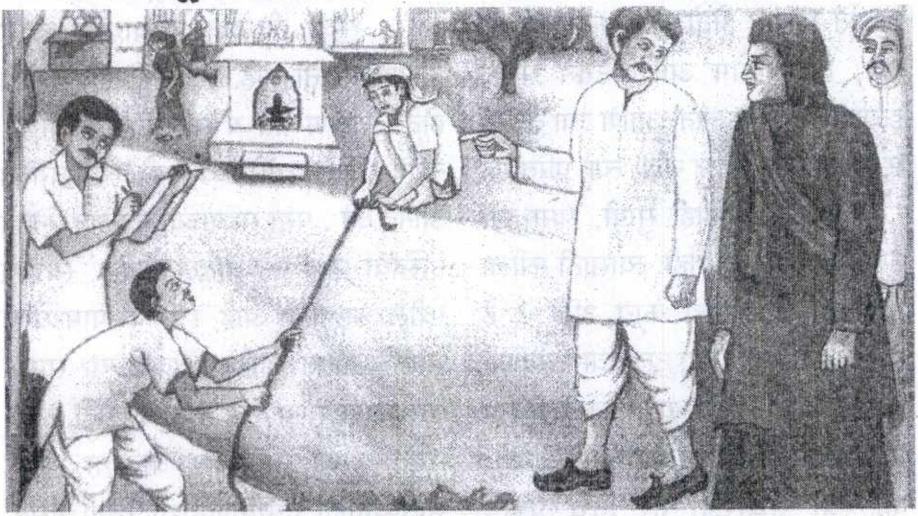

मंदिरापासून नव्हे तर मूर्तिपासून वैराग्य

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

परमेश्वराचे ज्ञान व दर्शन या क्रियेत मूर्तिपूजा ही साधक नसून बाधक (अडथळा) आहे, असा स्वामी दयानंदांचा पूर्ण विश्वास होता. ते या गोष्टीचे संपूर्णपणे खंडन करीत असत की **'मूर्तिपूजा हा एक अशी पायरी आहे, जिला उपयोगात आणून आम्ही परमेश्वराच्या जवळ पोहोचू शकतो.'** याविपरीत ते मूर्तिपूजेला अशा मोठ्या दरीची उपमा देत असत की ज्यामध्ये अडकल्याने माणसाच्या हडांचा चुरा होतो. तरी पण ते मुसलमानांप्रमाणे मूर्तिभंजक नव्हते. जर लोकांनी राम-कृष्ण इत्यादींच्या कोरीव मूर्ती बनविल्या व ते त्यांना परमेश्वर स्वरूप मानून त्यांची पूजा करीत असतील, तर ते त्यांचे अज्ञान आहे. ते लोकां मधील मूर्तिपूजेविषयीच्या मनो-भावनांना बदलू इच्छीत होते.

मूर्ती किंवा मंदिरांना नाहीशे करणे हा त्यांचा उद्देश्य नव्हता. याविपरीत आम्ही तर हे पाहतो की देशाचे मान्यवर धार्मिक नेते व सर्वात पूज्य सुधारकाची ख्याती मिळविण्याअगोदर पर्यंत ते बहुतेक करून मंदिरांतच थांबत होते व तेथील पुजाऱ्यांकडून पाहुणचार घेत होते.

एक घटना फर्रूखाबादची आहे. तेथील बाजारात सडक बनविली जात होती. मध्येच एक छोटे से मंदिर आले होते. त्यामुळे सडळ रोड बनविणे अवघड झाले होते. एका भक्ताने स्वामीजींना म्हंटले की स्वामीजींनी जर त्यांच्या ओळखीच्या शहर विकास अधिकाऱ्यास आग्रह धरला, तर ते

thearyasamaj.org

या मंदिरास तोडू शकतात. त्यामुळे सडक ही सरळ बनेल व मूर्तिपूजेचा आधार देखील नाहीसा होईल. स्वामीजींनी असा प्रस्ताव ठेवणाऱ्या माणसाला नकार देत म्हंटले- **मी तर लोकांच्या मन मंदिरातील जडपूजेविषयीचा खोटा विश्वास दूर करू इच्छीतो, धातुनिर्मित मूर्ती व मंदिरांची तोडफोड करणे हे माझे उद्दीष्ट नव्हे.** खरे तर मूर्तिपूजेचे समूळ निवारण तेव्हाच शक्य आहे, जेंव्हा आम्ही लोकांना हा विश्वास दाखवू की हे कृत्य ईश्वर पूजेसारखे नाही. महंमद गजनीप्रमाणे मंदिरांना नष्ट भ्रष्ट केल्याने व प्रतिमांची तोड-फोड केल्याने जडपूजेच्या विचारांना नाहीसे करता येत नाही.

- शोक वार्ता -

सुभाष हलवाई यांचे निधन

लातूर शहरातील प्रसिद्ध आर्य समाजी स्व.श्री किशनराव हलवाई यांचे सुपुत्र श्री सुभाष हलवाई यांचे गेल्या २ डिसेंबर २०१३ रोजी निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुले, एक मुलगी, सुना नातवंडे असा परिवार आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

- वार्ता विशेष -

नांदेडच्या आंतरजातीय विवाह मेळयास उत्स्फूर्त प्रतिसाद

प्रांतीय सभेच्या निर्देशनाखाली नांदेड येथील आर्य समाजात दि. १ डिसेंबर २०१३ रोजी आंतरजातीय विवाहेच्छुक युवक - युवतींचा परिचय मेळावा उत्साहात पार पडला. रेणापुरच्या आंतरजातीय विवाह मंडळाच्या वतीने आयोजित या मेळाव्याचे उद्घाटन ज्येष्ठ शिक्षणतज्ज्ञ श्री मधुकरराव पाटील खतगांवकर यांच्या हस्ते झाले. अध्यक्षस्थानी मंडळाचे संस्थापक सदस्य व विद्यमान अध्यक्ष श्री माणिकराव भोसले हे होते. संयोजक प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनी आर्य समाजप्रणित आंतरजातीय विवाह उपक्रमांची यथोचित माहिती देऊन असे विवाह ही काळाची गरज असल्याचे प्रतिपादन केले. या मेळाव्यात सर्वश्री माजी आ. शिवराज तोंडचिरकर, आचार्य धर्मदीप लोखंडे, नारायणराव कुलकर्णी, डॉ. रमा नवले, डॉ. साबळे, डॉ.श्री व सौ. भालेराव आर्य सभेचे मंत्री, राजेंद्र दिवे, पं. ज्ञानकुमार आर्य, यादवराव भांगे, डॉ.सौ. शारदा तुंगार आदींनी आपल्या जातीअंताची गरज प्रतिपादित करून आंतरजातीय विवाहांना प्रोत्साहन देण्याचे आवाहन केले.

या मेळव्यात ५० युवक-युवतींनी आंतरजातीय विवाहांसाठी नोंदणी करून आपला परिचय करून दिला.

thearyasamaj.org

विद्यालयीन राज्य वक्तृत्व स्पर्धा यशस्वी

कु. निशिगंधा प्रथम, कु. अश्विनी द्वितीय व कु. श्रावणी तृतीय

म.आर्य प्र. सभेतर्फे नुकत्याच घेण्यात आलेल्या स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धेत अंबाजोगाईच्या श्रीमती गोदावरीदेवी कुंकूलोळ योगेश्वरी कन्या विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु. निशिगंधा लक्ष्मीकांत परळकर हिने प्रथम (रू. १५००/-) क्रमांकाचे तर परळीच्या महर्षी कणाद विद्यालयाच्या कु. अश्विनी ओमप्रकाश बजाज हिने द्वितीय (रू. ११००/-) आणि न्यू हायस्कूल विद्यालयाच्या कु. श्रावणी जगदीश चौधरी या विद्यार्थिनीने तृतीय (रू. ७५०/-) क्रमांकाचे पारितोषिक पटकावले, तर याच विद्यालयाच्या चि. सिद्धार्थ माणिकराव देशमुख व कु. धनश्री भारत मगर व तसेच मिलिंद विद्यालयाच्या कु. पल्लवी धुराजी मुंडे यांनी उत्तेजनार्थ पारितोषिके मिळविली.

परळी येथील आर्य समाजात दि. २४ नोव्हेंबर २०१३ रोजी घेण्यात आलेल्या या वक्तृत्व स्पर्धेला विद्यार्थ्यांकडून उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. प्रांतीय आर्य सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य (हुलगुंडे) यांच्या हस्ते व सामाजिक कार्यकर्ते श्री गिरधारीलालजी गट्टाणी यांच्या अध्यक्षतेखाली ही स्पर्धा सुरू झाली. प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री वैद्य विज्ञानमुनी व श्री ज्ञानकुमार आर्य हे उपस्थित होते. या स्पर्धेकरिता *'महर्षी दयानंदांच्या विचारांनीच देश भ्रष्टाचारमुक्त होऊ शकतो.'* हा विषय ठेवण्यात आला होता.

स्पर्धेचे परीक्षक म्हणून सर्वश्री ज्ञानकुमार आर्य (लातूर), प्रा. लक्ष्मीकांत शास्त्री (माजलगाव) व भागवतराव आघाव (सारडगाव ता.परळी) यांनी काम पाहिले. विजेत्या स्पर्धकांना रोख पारितोषिकां सोबतच वैदिक साहित्य व स्मृतिचिन्हांचे वितरण आर्य समाजाचे मंत्री उग्रसेन राठौर, प्रभुलाल गोहिल व इतर मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले. याप्रसंगी मान्यवरांनी विद्यार्थ्यांनी महर्षी दयानंदांचे विचार जीवनात अंगिकारून उत्कृष्ट वक्ते होण्यासाठी आवाहन केले. स्पर्धेचे प्रास्ताविक पं. प्रशांतकुमार शास्त्री यांनी केले, तर नियमांची माहिती प्रा. अरूण चव्हाण यांनी करून दिली. उदय तिवार यांनी सूत्रसंचलन केले, तर श्री उग्रसेन राठौर यांनी आभार मानले. विजयी स्पर्धकांचे प्रांतीय आर्य सभेचे प्रधान स्वामी श्रद्धानंदजी कार्यकारी प्रधान, बळीराम पाटील, मंत्री राजेंद्र दिवे यांच्यासह इतरांनी अभिनंदन केले आहे.

thearyasamaj.org

राव कर्णसिंहाचे गर्वहरण

स्वामीजींकडून झालेली रासलीलेवरील टिका राव कर्णसिंह हा राजा सहन करू शकला नाही. आणि तो लागलीच कडक शब्दात बोलू लागला. स्वामीजी बराच वेळ हे सर्व ऐकत राहिले. पण जेंव्हा कर्णसिंह हा आपल्या तलवारीचे बळ अधिकच दाखवू लागला तेंव्हा...

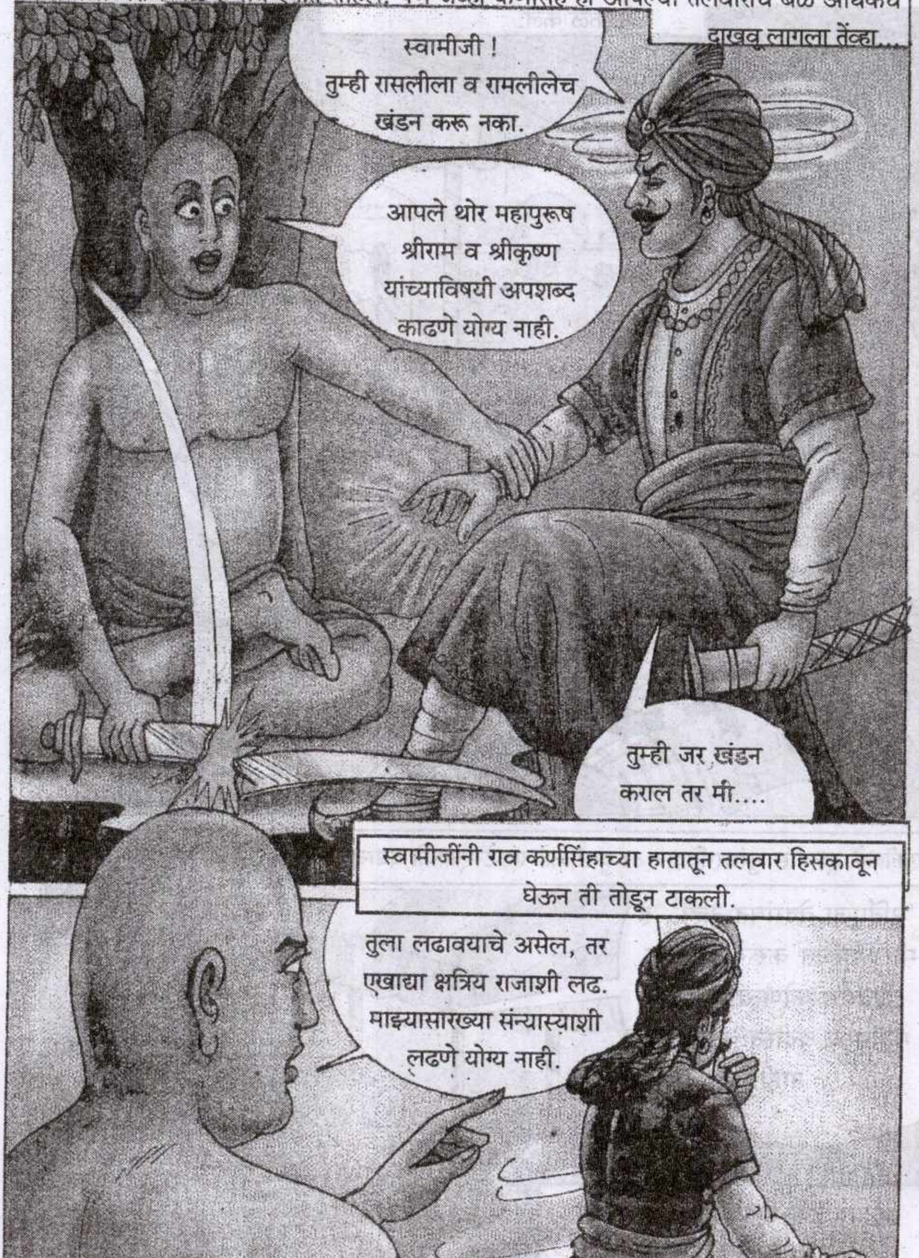

राव खजिल होऊन तेथून निघून गेला.

thearyasamaj.org

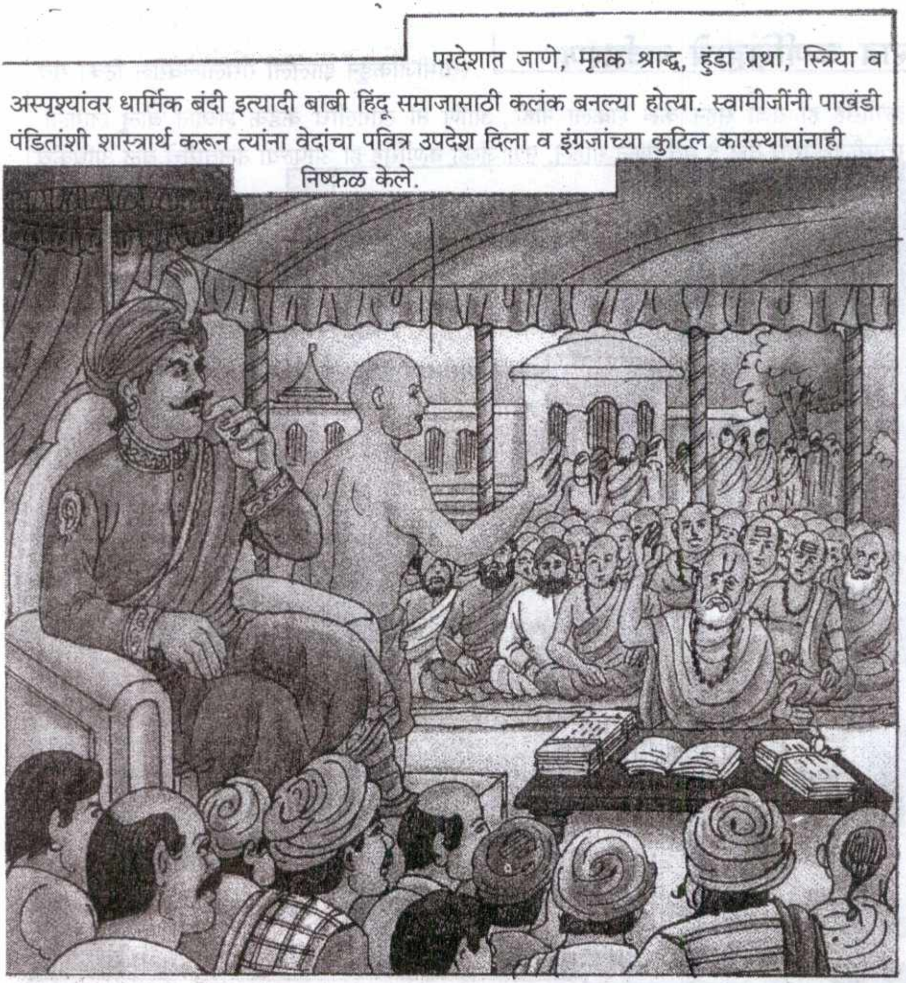

thearyasamaj.org

स्व. बिराजदार स्मृति विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१३

प्रथम क्रमांक प्राप्त करनेवाली कु. निशिगंधा परलकर (गोदावरी देवी कुंकूलोळ योगेश्वरी विद्यालय अंबाजोगाई)को पुरस्कृत करते हुए श्री राठौरजी ।

द्वितीय आनेवाली कु. अश्विनी ओमप्रकाश बजाज(म.कणाद विद्यालय,परली) को पुरस्कार प्रदान करते हुए पं.प्रशांतकुमार शास्त्री ।

तृतीय पारितोषिक विजेत्री छात्रा कु. श्रावणी जगदीश चौधरी को पुरस्कार देते हुए पं. लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी ।

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री ______________________________

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दयाराम राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)